मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

वर्ष-१२, अंक-०६ सितंबर २०२२ मुम्बई सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४० मूल्य १००.०० रूपए

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

For Booking Call : 1800 8899 757 | 1800 8898 191 | 9510689598

TRIYOM REALTY | Divine by Nature

ULTRA PREMIUM
5BHK APARTMENTS &
6 BHK PENTHOUSES
2.7 FSI PROJECT
SA : 5503-7180
CA : 2916-3954
3 TOWERS | 50 UNITS
LOCATION
NR DHIRAJ SONS,
GD GOENKA CANAL ROAD,
VESU, SURAT

● Corporate Office ●
Bungalow No. 18, Mahada Telephone Exchange,
4 Bungalows, Andheri West, Mumbai,
Maharashtra, Bharat - 400 053

● Head Office ●
3002-3003, 3rd Floor, World Trade Center,
Udhna Darwaja, Ring Road, Surat,
Gujarat, Bharat-395003

यह है हम भारतवासियों का भारत सरकार से निवेदन

जरूर देखें : http://www.mainbharathun.co.in भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं

.....एक और कार्यक्रम हरियाणा के रेवाड़ी में

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' अभियान की सफलता के लिए भारत सरकार के आयकर अधिनियम के ८०जी व १२ए के अंतर्गत पंजीकृत अंतरराष्ट्रीय संस्थान के पदाधिकारी १८ सितंबर २०२२ को दिल्ली से हरियाणा स्थित रेवाड़ी पहुंचे, जहां पर स्थित सोमानी कॉलेज में दीप प्रज्वलन के साथ स्वतंत्रता सेनानी आरडी सोमानी को श्रद्धांजलि प्रस्तुत

किया गया। आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित भारतीयों ने एक ही बात कही कि आज से,अभी से हम अपने देश को केवल 'भारत' के नाम से ही पुकारेंगे, प्राचीनतम नाम भारत को केवल 'भारत' ही बोलेंगे और जब भी किसी का अभिवादन करेंगे 'जय भारत' से ही करेंगे।

कार्यक्रम की सफलता के लिए विशेष सहयोग रहा जननेता राष्ट्रीय संयोजक राष्ट्रीय चेतना मंच के रेवाड़ी प्रवासी विजय सोमाणी, श्रीमती मंजू सोमाणी, परिवर्तन सोमाणी, विशाल सोमाणी के साथ विकास जैन आदि का रहा। आयोजित कार्यक्रम के मध्य मुंबई से पधारे 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के राष्ट्रीय अध्यक्ष, वरिष्ठ पत्रकार व संपादक, हिंदी सेवी, पर्यावरण प्रेमी बिजय कुमार जैन व कोलकाता से पधारीं प्रसिद्ध समाजसेविका राष्ट्रीय

कोषाध्यक्ष श्रीमती निशा जी लड्ढा का उपस्थित जनसमूह ने करतल ध्वनि के साथ पुरजोर स्वागत किया गया। आज के कार्यक्रम में दिए गए टी-शर्ट व नोटबुक के प्रदाता कोलकाता निवासी सूरज देवी जोधराज लड्ढा थे। रेवाड़ी स्थित अखिल भारतवर्षिय माहेश्वरी महासभा के राष्ट्रीय पदाधिकारी, व्यवसाई व प्रमुख समाज सेवी अशोक सोमाणी,आकाश सोमाणी ने भी समर्थन देते हुए कहा कि 'जय भारत' बहुत बड़ा अभियान है, एक न एक दिन सफलता जरुर मिलेगी, जब हम सब मिलकर सामूहिक प्रयास करेंगे। संध्या ४:०० बजे राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्रीमती निशा लड्ढा गुरुग्राम से पधारीं श्रीमती सोनल कौशिक व जुझारू पत्रकार यूट्यूब में प्रख्यात पवन जुनेजा ने प्रस्थान दिल्ली की ओर कर दिया। जय भारत!

मैभाहूँ

!! जय भारत !! !! जय भारत !! !! जय भारत !!

अंतर्राष्ट्रीय संगठन
मैं भारत हूँ फाउंडेशन
के साथ समस्त भारतीयों का एकमात्र उद्देश्य

- भारत के हर तन पर हो कपड़ा
- भारत के हर पेट में हो रोटी
- भारत के हर भारतीय को मिले शिक्षा
- भारत के हर घर में हो हरियाली
- भारत का हर घर बचाए जल (पानी)
- भारत का हर गॉव हो शक्तिशाली
- भारत की एक हो राष्ट्रभाषा

आप भी सहयोगी बन सकते हैं

आप भी सहयोगी बन सकते हैं

भारतीय छात्रों को लिखने के लिए नोट बुक दी जा रही है भेंट स्वरूप

64 Pages

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
द्वारा
Long Note Book

करें अर्थिक सहयोग

ONLINE DONATION ACCEPTED

A/C Name	: MAIN BHARAT HUN FOUNDATION
Bank	: HDFC
A/C No.	: 50100479479181
IFSC	: HDFC0000592
BRANCH	: MAROL, ANDHERI (E)

सहयोग स्वरूप दी गयी राशी भारतीय आयकर अधिनियम **80G** व **12A** के अनुसार मान्य की जाएगी।

राष्ट्रीय कार्यालय : बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400059
फोन : 022-28509999 mainbharathunfoundation@gmail.com,
www.mainbharathun.co.in

◆ कोलकाता कार्यालय ◆
ऑफिस नं. 77, सदासुख कटरा, दूसरा तल्ला,
201/बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत-700007 फोन : 033-48039531

◆ दिल्ली कार्यालय ◆
U-74, शॉप नं. 17, तिरूपती बिल्डींग, गणेश कचोरी के पास, विकास मार्ग, शकरपुर, लक्ष्मी नगर मेट्रो स्टेशन गेट नं. 2 के पास, दिल्ली, भारत-110092 फोन: 011-41556214

!! जय भारत !! !! जय भारत !! !! जय भारत !!

अगला विशेषांक अक्टूबर २०२२

शुभ दिपावली

अग्र क्रान्ति लाना है सारे विश्व में तुम्हें छा जाना है
महाराजा अग्रसेन की जन्म जयंती पर
हार्दिक शुभकामनायें

विष्णु कुमार गर्ग
भ्रमणध्वनि : 9811112650

प्रधान	:	श्रीमती कान्ता रानी अग्रवाल चेरि. सोसायटी (पंजी.)
प्रधान	:	धर्मार्य औषधालय प्रबन्धक कमेटी (पंजी.)
रा. मंत्री	:	अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासभा (पंजी.)
महामंत्री		महाराजा श्री अग्रसेन चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी.)
महामंत्री	:	महाराजा श्री अग्रसंन सेवा समिति (पंजी.)
महामंत्री	:	श्री रामलीला कमेटी (रजि.), शाहदरा, दिल्ली
चेयरमैन	:	जन कांवड़ सेवा समिति
रा. महामंत्री	:	भारतीय अग्रवाल परिषद

26/65-66ए गल्ली नं. 11, पाण्डव रोड,
विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ला, भारत-110032

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

Padam Kumar Jain

Rattanlal Surajmull compound, Main Road, Ranchi,
Jharkhand, Bharat-834001 | Phone : (06582) 256281
e-mail : Padamjaincbsa@gmail.com

हिंदी भाषा शताब्दियों से राष्ट्रीय एकता का माध्यम है- बिजय कुमार जैन

१७ सितंबर

विश्व के सबसे लोकप्रिय जननेता के जन्म दिवस पर विशेष

नरेंद्र दामोदर दास मोदी भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री हैं। २६ मई २०१४ को उन्होंने भारत के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली थी। नरेंद्र मोदी उत्तर प्रदेश के राज्य वाराणसी से भारतीय जनता पार्टी के सांसद हैं। २०१४ के लोकसभा चुनावों में नरेंद्र मोदी ने वडोदरा और वाराणसी दोनों लोकसभा सीटों से चुनाव लड़ा था। दोनों ही सीटों से उन्हें भारी मतों से सफलता मिली थी, हालांकि बाद में उन्होंने वडोदरा सीट छोड़ दी।

नरेंद्र मोदी का जन्म गुजरात के वडनगर में १७ सिंतबर १९५० को हुआ था। नरेंद्र मोदी का शुरुआती समय संघर्ष भरा रहा था। केवल १७ साल की आयु में उन्होंने घर छोड़ दिया। २० वर्ष की उम्र में वे आरएसएस के नियमित सदस्य बन गए थे। भारत के प्रधानमंत्री बनने से पहले नरेंद्र मोदी तीन बार गुजरात के मुख्यमंत्री (२००१-२०१४) रह चुके हैं। मोदी के प्रधानमंत्री कार्यकाल के दौरान करीब १०० नई लोक कल्याणकारी योजनाओं पर काम किया गया, जैसे जनधन योजना, मेक इन इंडिया (भारत), प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना, अटल पेंशन योजना, डिजिटल इंडिया (भारत) मिशन आदि। प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत मिशन के तहत पूरे देश में २ करोड़ टॉयलेट बनाने का लक्ष्य तय किया गया है।

दिन के २४ घंटे में से नरेंद्र मोदी १८ घंटे तक काम करते हैं। नरेंद्र मोदी के दिन की शुरुआत योग से होती है। नरेंद्र मोदी पूर्ण रुप से शाकाहारी भोजन करते हैं। मोदी समय के काफी पाबंद है अगर वो दिल्ली में होते हैं तो सुबह ९.३० बजे ऑफिस पहुंच जाते हैं। 'मैं भारत हूँ' परिवार आपकी दिर्घायु रहने की कामना करता है।

केंद्र की मोदी सरकार के आठ साल पूरे, ये हैं बड़ी उपलब्धियां

नरेंद्र मोदी ने २०१४ में अच्छे दिन के वादे के जरिए सत्ता पर काबिज हुए और २०२० में आत्मनिर्भर का नारा दिया। मोदी को एक मजबूत और लोकप्रिय नेता माना जा रहा है, ऐसी छवि बनी है कि वो कड़े फैसले लेने में हिचकते नहीं हैं। मोदी सरकार के आठ साल पूरे होने जा रहे हैं और ऐसे में हम मोदी सरकार की विशेष उपलब्धियों का जिक्र करेंगे।

देश की सत्ता पर नरेंद्र मोदी को काबिज हुए आठ साल पूरे होने जा रहे हैं। नरेंद्र मोदी ने अपने कार्यकाल में जता दिया है कि राजनीतिक इच्छाशक्ति वाली सरकार अपने फैसलों से कैसे राजनीति की दशा-दिशा बदल सकती है। नरेंद्र मोदी सरकार की उपलब्धियों पर गौर करें तो देश ही नहीं बल्कि दुनिया भर में भारत का सम्मान बढ़ा है, लेकिन कोरोना वायरस के संक्रमण की दूसरी लहर से उपजे हालात से निपटने की मोदी सरकार के सामने भी बड़ी चुनौती खड़ी हो गई थी, इसके बावजूद मोदी सरकार में एक के बाद एक हुए ऐतिहासिक निर्णयों से बदलाव आए, जिन्होंने भारत की विकास यात्रा को नई गति दी।

अच्छे दिन से आत्मनिर्भर तक

नरेंद्र मोदी ने २०१४ में अच्छे दिन के वादे के जरिए सत्ता पर काबिज हुए और २०२० में आत्मनिर्भर का नारा दिया। मोदी को एक मजबूत और लोकप्रिय नेता माना जा रहा है। ऐसी छवि बनी है कि वो कड़े फैसले लेने में हिचकते नहीं हैं और नई लीक बनाने की भी कोशिश करते हैं। मोदी इस बात से भी बेफिक्र रहते हैं कि जिस राह पर चलने का फैसला किया है वो कहां जाएगी और क्या नतीजे मिलेंगे। कश्मीर में अलगाववाद और विद्रोह को चारा मुहैया करने वाले अनुच्छेद ३७० का खात्मा सरकार ने ऐसे ही किया तो आतंकवाद पर भी नकेल कसने का काम सरकार ने किया।

जनकल्याण की दिशा में उठाए गए कदम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई वाली सरकार ने जनकल्याण की दिशा में कई बेहतर कदम उठाए हैं। मोदी सरकार ने २८ अगस्त २०१४ का देश की जनता को बैंकिंग से जोड़ने के लिए **जन-धन योजना** की घोषणा की, इस योजना के तहत ३४.३१ करोड़ लोगों के खाते खोले गए। देश में बैंकों ने कैंप लगाकर वंचित लोगों के खाते खोलकर उन्हें बैंकिंग सुविधा से जोड़ने का काम किया गया, देश के गरीब भी गैस चूल्हे पर खाना बना सके, इस मकसद से मोदी सरकार ने 'उज्ज्वला योजना' का आगाज किया, इस योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले गरीब परिवारों को मुफ्त में रसोई गैस दी गयी।

मोदी सरकार ने हर घर को पक्की छत उपलब्ध कराने के दिशा में केंद्रीय शहरी एवं आवास मंत्रालय २०१८ में 'प्रधानमंत्री आवास योजना' के तहत एक करोड़ घरों के निर्माण का लक्ष्य रखा, मोदी सरकार की इस योजना के तहत ग्रामीण और शहरी दोनों इलाके में पक्के मकान के लिए सरकार के द्वारा आर्थिक मदद भी दी जा रही है, ऐसे ही मोदी सरकार ने हर घर को बिजली पहुंचाने के लिए २०१७ में 'सौभाग्य योजना' की शुरुआत की, इस योजना के तहत हर घर तक बिजली पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया। देश के हर शख्स को बेहतर इलाज के लिए मोदी सरकार ने 'आयुष्मान भारत योजना' की शुरुआत की है, जिसके तहत पांच लाख रुपये का इलाज मुफ्त में हो सकता है।

भारतीय सेना का पराक्रम दुनिया ने देखा

नरेंद्र मोदी सरकार में भारतीय सेना ने जबरदस्त पराक्रम **शेष पृष्ठ ७ पर...**

मैं भारत हूँ

वर्ष -१२, अंक ०६, सितंबर २०२२

वार्षिक मुल्य
रु.१११११/-
१२ अंकों का

सम्पादक - बिजय कुमार जैन

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

- 'मैं भारत हूँ' में प्रकाशित लेखों/ कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्ण सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'मैं भारत हूँ' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र,
भारत - ४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com

अन्तरताना:- www.mainbharathun.co.in

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

सम्पादकीय ....

महाराजा अग्रसेन जी के सिद्धांतों पर चल रहे हैं नरेंद्र मोदी

हम सभी जानते हैं कि आज १३५ करोड़ भारतीयों के भारत ने विश्व में अपनी पहचान बना ली है, साथ ही हम यह भी जानते हैं कि आज के भारत का कुशल नेतृत्व भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों में हैं जो कि निर्बाध जारी है।

आज से लगभग ५१७६ सालों पहले एक ऐसे युगपुरुष का जन्म हुआ था जिसका नाम अग्रसेन रखा गया। बाल अवस्था में ही तत्कालीन समय के लोगों को लगना शुरू हो गया था कि बालक अग्रसेन जरूर कुछ जगत के लिए करेगा और अग्रसेन ने किया भी.....

मैं महाराजा अग्रसेन जी के जीवन के सिद्धांतों को लिखना चाहूं तो किताबों के पन्ने कम पड़ जाएंगे, पर एक सिद्धांत का उल्लेख जरूर करना चाहूंगा और वह है 'एक ईंट-एक रुपैया'। तत्कालीन अग्रोहा साम्राज्य के महाराजा अग्रसेन जी ने अपने राज्य के नागरिकों की समृद्धि के लिए एक सिद्धांत दिया, 'एक ईंट-एक रूपैया' जो कि आम जनता को खास जनता बनाने के लिए प्रस्तुत किया था, कारण यह था कि यदि अग्रोहा साम्राज्य में कोई भी नवागंतुक आए और उसे अग्रोहा का निवासी 'एक ईंट-एक रूपैया' का सहयोग करे तो आने वाला आगंतुक एक दिन में ही अपने घर व व्यापार का मालिक बन कर समृद्धी प्राप्त कर लेगा और मेहनत का राज्य का भी विकास कर सकेगा। आज भी अग्र समाज अग्रसेन जी के सिद्धांत को अपनाए हुए है, तभी तो अग्र समाज आज नौकरी देने वाला समाज कहलाता है और विश्व में अपनी प्रतिभा भी बनाया हुआ है। कर्मयोगी अग्र समाज अग्रसेन जी के सिद्धांतों को अपनाकर ही आज क्षितिज का स्वामी बना हुआ है और अग्रसेन जी को अपना पथ प्रदर्शक व देवता मानता है। महाराजा अग्रसेन जी की जन्म जयंती २६ सितंबर २०२२ पर सभी अग्रजों को मेरी तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं और उनकी राष्ट्रीय सोच अग्रधारा को हार्दिक बधाईयां।

भारत के वर्तमान यशस्वी निर्णायक भूमिका निभाने वाले दूरदर्शिता की सोच रखने वाले हर कोई सुखी व समृद्ध रहे ऐसे सिद्धांत पर चलने वाले १३५ करोड़ भारतीयों के भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस १७ सितंबर पर हार्दिक बधाईयां, मोदी जी दीर्घायु रहें, भारत मां की इसी प्रकार सेवा करते रहें, भारत को विश्व गुरु बनाने में अपनी अहम भूमिका निभाएं और विश्व के मानचित्र (Globe) से इंडिया को विलुप्त करवा कर 'भारत' लिखवाने का यश प्राप्त करें ताकि विश्व को भारत मां कह सके कि 'मैं भारत हूं'।

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि-भाषा

आपका अपना
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

जन-जन की आशा है हिंदी, भारत की भाषा है हिंदी-बिजय कुमार जैन

पृष्ठ ५ से... का प्रदर्शन कर ये दिखा दिया कि भारत की रक्षा शक्ति दुनिया के किसी विकसित देश से कम नहीं, इसके साथ ही सरकार ने ये भी संदेश दिया कि कड़े फैसले लेने में हम भी पीछे नहीं है। 'सर्जिकल और एयर स्ट्राइक' के जरिए ये बता दिया कि भारत पारंपरिक लड़ाई के साथ साथ मॉड्र्न लड़ाई में दुनिया की पेशेवर सेनाओं में से एक है। उरी आंतकी हमले के बाद २८ सितंबर २०१६ को दुनिया का आधा हिस्सा सो रहा था और भारतीय सेना की स्पेशल फोर्स पाकिस्तान के नापाक मंसूबों का मुंहतोड़ जवाब दे रही थी। भारतीय कमांडोज पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में आतंकियों के लॉन्च पैड्स पर हमला कर उन्हें तबाह कर दिया था, इसके बाद पुलवामा में आतंकी हमला हुआ तो भारतीय वायुसेना ने २६ फरवरी को बालाकोट एयर स्ट्राइक से पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दिया। भारतीय जवानों ने पाकिस्तान की सीमा में घुस कर आतंकियों के ठिकानों को तबाह कर दिया था।

एक देश एक टैक्स से लेकर सवर्णों का आरक्षण तक

भारत में नया गुड्स ऐंड सर्विस टैक्स (जीएसटी) और सवर्ण आरक्षण का मामला लंबे समय से अटका हुआ था। मोदी सरकार ने सत्ता में आने के तीन साल बाद संसद से जीएसटी को पास कराया और यह देश में एक जुलाई २०१७ से लागू हो गया। देश में कर सुधार की दिशा में यह सबसे बड़ा कदम था। जीएसटी लागू करने का मकसद एक देश-एक कर (वन नेशन, वन टैक्स) प्रणाली है। जीएसटी लागू होने के बाद उत्पाद की कीमत हर राज्य में एक ही हो गई और राज्यों को उनके हिस्सा का टैक्स केंद्र सरकार देती है। सवर्ण आरक्षण की मांग देश में लंबे समय से हो रही थी लेकिन पिछली सरकारों ने इस पर कार्य नहीं किया, मोदी सरकार ने अपने पहले कार्यकाल के आखिरी समय २०१९ के जनवरी में सवर्ण समुदाय को आर्थिक आधार पर १० फीसदी आरक्षण देने का फैसला किया, इस सवर्ण आरक्षण विधेयक को दोनों सदनों से पास कराकर कानूनी अमलीजामा पहना दिया गया, जिसके जरिए सवर्ण समुदाय के लोग सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश के लिए आर्थिक आधार पर आरक्षण का लाभ उठा रहे हैं।

अनुच्छेद ३७० को निष्प्रभावी और आतंकवाद पर नकेल

मोदी सरकार ने अपने दूसरे कार्यकाल में सबसे एतिहासिक फैसला जम्मू-कश्मीर को लेकर किया जो जनसंघ के जमाने से प्राथमिकता पर रहा है। जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद ३७० को निष्प्रभावी बनाने का कदम उठाने के साथ-साथ राज्य को दो हिस्सों में बांटने का काम भी इसी कार्यकाल में हुआ। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने जम्मू-कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने वाले अनुच्छेद-३७० को निष्प्रभावी करने का प्रस्ताव मंजूर किया और जम्मू-कश्मीर और लद्दाख को दो केंद्र शासित प्रदेश में बांट दिया गया।

मोदी सरकार के इस फैसले के बाद कश्मीर में एक देश, एक विधान और एक निशान लागू हो गया है। अनुच्छेद ३७० को निष्प्रभावी बनाने के साथ-साथ मोदी सरकार ने आतंकवाद निरोधी कानून को अनलॉफुल एक्टिविटिज (प्रिवेंशन) एक्ट में संशोधन कर और कड़ा किया, इसके तहत अब किसी भी व्यक्ति को आतंकवादी घोषित किया जा सकता है, जो कि कई देशों में पहले से ही ऐसा किया जाता रहा है।

अल्पसंख्यकों से संबंधित फैसले

नरेंद्र मोदी सरकार ने सत्ता में आते ही अल्पसंख्यक समुदाय से जुड़े कई अहम फैसले लिए हैं। मोदी सरकार ने अपने पहले कार्यकाल में मुसलमानों को हज यात्रा के लिए दी जाने वाली सब्सिडी खत्म करने का फैसला २०१८ में किया। सब्सिडी हटाने के निर्णय से केंद्र सरकार को ७०० करोड़ रुपये की बचत हर साल होगी, ऐसे ही सरकार ने ४५ साल से ज्यादा उम्र की महिलाओं को बिना पुरुष अभिभावक के हज करने की इजाजत दी थी।

मोदी सरकार ने दूसरी बार सत्ता में आते ही सबसे पहले मुस्लिम महिलाओं को 'तीन तलाक' से निजात दिलाने का कदम उठाया। मोदी सरकार ने 'तीन तलाक' पर पाबंदी के लिए मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संरक्षण विधेयक-२०१९ को लोकसभा और राज्यसभा से पारित कराया। एक अगस्त २०१९ से 'तीन तलाक' देना कानूनी तौर पर जुर्म बन गया। मोदी सरकार ने नागरिकता संशोधन कानून को १० जनवरी २०२० को अमलीजामा पहनाया, इस कानून से पाकिस्तान, अफगानिस्तान और अन्य देशों में रह रहे हिंदू, सिख, बौद्ध, पारसी और यहूदी को भारतीय नागरिकता मिल सकती है, इस कानून में **शेष पृष्ठ ८ पर...**

उत्तरप्रदेश
- 13 जिलों में गोंड को अनुसूचित जनजाति में शामिल किया गया
- गोंड की 5 उपजाति (धुरिया, नायक, ओझा, पठारी, राजगोंड) अनुसूचित जनजाति में शामिल

हिमाचल प्रदेश
- हट्टी समुदाय-अनुसूचित जनजाति की सूची में शामिल
- इससे लगभग 1 लाख 60 हजार लोग इस सूची में शामिल होंगे

छत्तीसगढ़
- 12 जातियों में से 11 को पर्यायवाची शब्द के रूप में जोड़ा गया है
- 1 बिंझिया जाति को भी इस सूची में जोड़ा गया
- 15 साल से यह मामला पेंडिंग में था

तमिलनाडु
- नारिकोरवन के पर्याय के रूप में कुरुविक्करन को जोड़ा गया

कर्नाटक
- काडू कुरुबा के पर्याय के रूप में बेट्टा-कुरुबा को जोड़ा गया

पृष्ठ ७ से... किए गए बदलाव को लेकर देश भर में विरोध प्रदर्शन हुए, जिसमें कई लोगों की जानें भी गई। मुस्लिम महिलाओं ने इस कानून के खिलाफ सड़क पर उतरकर आंदोलन किया, इसके बावजूद सरकार ने अपने कदम वापस नहीं लिये।

मोदी सरकार के आर्थिक फैसले

आठ सालों के दौरान सबसे साहसिक आर्थिक कदम रहा १० सरकारी बैंकों का बड़े बैंकों में विलय, इससे वर्कफोर्स का सही इस्तेमाल हुआ और खर्चों में भी कटौती हुई, लेकिन सरकार के इन तमाम कामों के असर पर वैश्विक आर्थिक संकट के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था में आई परेशानी भारी पड़ी। मोदी सरकार के आम बजट से ऐसा कोई संकेत नहीं मिला कि अर्थव्यवस्था में कोई क्रांतिकारी सुधार होने जा रहा है।

मध्य वर्ग में सरकार की नीतियों को लेकर निराशा रही। मोदी सरकार के लिए आर्थिक चुनौतियां लगातार बड़ी हो रही हैं। कोरोना वायरस की पहली लहर में महामारी फैलाव को रोकने के लिए लागू लॉकडाउन से अर्थव्यवस्था की हालत और बिगड़ी, ऐसे में सरकार ने आत्म निर्भर दिशा में कदम बढ़ाया।

भारत की अंतरराष्ट्रीय पहचान

केंद्र में नरेंद्र मोदी सरकार के आने बाद दुनिया के तमाम देशों के साथ भारत के संबंध प्रगाढ़ हुए हैं और भारत सम्मान बढा है, अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने पहले कार्यकाल में ५० से ज्यादा देशों का दौरा किया। अमेरिका के साथ भारत ने अपने रिश्ते मजबूत किए। सऊदी अरब से लेकर यूएई सहित तमाम इस्लामिक देशों ने भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित भी किया। दुनिया के इस्लामिक देशों के साथ भारत के संबंध पहले से ज्यादा मजबूत हुए हैं।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ – बालिका शिशु की देखभाल

हमारा मंत्र होना चाहिए: 'बेटा बेटी एक समान' 'आइए कन्या के जन्म का उत्सव मनाएं। हमें अपनी बेटियों पर बेटों की तरह ही गर्व होना चाहिए। मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि अपनी बेटी के जन्मोत्सव पर पांच पेड़ जरूर लगाएं।'
– प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी

'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' की शुरूआत प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने २२ जनवरी २०१५ को पानीपत, हरियाणा में की थी। 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' योजना से पूरे जीवन-काल में शिशु लिंग अनुपात में कमी को रोकने में मदद मिली और महिलाओं के सशक्तीकरण से जुड़े मुद्दों का समाधान हुआ। यह योजना तीन मंत्रालयों द्वारा कार्यान्वित की जा रही है अर्थात महिला और बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य परिवार कल्याण मंत्रालय तथा मानव संसाधन मंत्रालय।

इस योजना के मुख्य घटकों में शामिल हैं प्रथम चरण राष्ट्रव्यापी जागरूकता और प्रचार अभियान चलाना तथा चुने गए १०० जिलों (जहां शिशु लिंग अनुपात कम है) में विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित कार्य करना। बुनियादी स्तर पर लोगों को प्रशिक्षण देकर, संवेदनशील और जागरूक बनाकर तथा सामुदायिक एकजुटता के माध्यम से उनकी सोच को बदलने पर जोर दिया जाए।

एनडीए सरकार कन्या शिशु के प्रति समाज के नजरिए में परिवर्तनकारी बदलाव लाने का प्रयास किया। प्रधान मंत्री मोदी ने अपने मन की बात में हरियाणा के बीबीपुर के एक सरपंच की तारीफ भी की। प्रधान मंत्री ने लोगों से बेटियों के साथ अपनी सेल्फी भेजने का अनुरोध भी किया और जल्द ही यह विश्व भर में प्रसिद्ध हो गया। भारत और दुनिया के कई देशों के लोगों ने बेटियों के साथ अपनी सेल्फी भेजी और यह उन सबके लिए एक गर्व का अवसर बन गया जिनकी बेटियां हैं।

विकास के प्रति नवीन दृष्टिकोणः सांसद आदर्श ग्राम योजना

प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने सांसद आदर्श ग्राम योजना के शुभारंभ पर अपना विचार साझा किया।

'हमारे लिए एक बड़ी समस्या रही है कि हमारा विकास आपूर्ति-उन्मुख रहा है। लखनऊ, गांधी नगर अथवा दिल्ली में एक स्कीम तैयार की गई, जिसे आरंभ करने का प्रयास भी किया गया। आदर्श ग्राम के द्वारा इस माडल को आपूर्ति-उन्मुख की बजाए मांग-उन्मुख करने का कार्य किया गया। स्वयं ग्राम में ही इसकी इच्छा विकसित की गई।

हमें केवल अपने विचार में परिवर्तन करना है। हमें लोगों के दिलों को जोड़ना है। सामान्यतः, सांसद राजनीतिक गतिविधियों में लिप्त रहते हैं, लेकिन इसके बाद वे ग्राम में जाएंगे, वहां कोई राजनीतिक गतिविधि नहीं होगी, यह परिवार की तरह होगा, ग्राम के लोगों के साथ बैठ कर निर्णय लिया जाएगा, इससे नई उर्जा का संचार होगा और भारत के हर ग्राम को एकजुट करेगा।

सांसद आदर्श ग्राम योजना (SAGY) का शुभारंभ ११ अक्तूबर २०१४ को किया गया, जिसका उद्देश्य एक आदर्श भारतीय गांव के बारे में महात्मा गांधी की व्यापक कल्पना को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ध्यान में रखते हुए एक यथार्थ रूप देना था। इसके अंतर्गत प्रत्येक सांसद एक ग्राम पंचायत को गोद लेता है और सामाजिक विकास को महत्व देते हुए इसकी समग्र प्रगति की राह दिखाता है जो इंफ्रास्ट्रक्चर के बराबर हो। 'आदर्श ग्राम' को स्थानीय विकास एवं सुशासन का संस्थान होना चाहिए जो अन्य ग्राम पंचायतों को प्रेरित करे।

ग्रामीणों को शामिल करके और वैज्ञानिक उपायों का लाभ लेते हुए, सांसद के नेतृत्व में एक ग्राम विकास योजना तैयार की जाती है, उसके उपरांत, विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की जाती है और विभागों द्वारा राज्य सरकार को भेजी जाती हैं। अब तक, पंचायत प्रोजेक्ट्स को वरीयता देने के लिए २१ स्कीमों को भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों ने संशोधित किया है। जिला स्तर पर सांसद की अध्यक्षता में प्रत्येक ग्राम **शेष पृष्ठ ९ पर...**

भारत की मानसिक उन्नति भली-भाँति तभी हो सकती है, जय शिक्षा का माध्यम 'हिन्दी' हो - पं. रामनारायण मिश्र

पृष्ठ ८ से... पंचायत के लिए मासिक समीक्षा बैठकें आयोजित की जाती हैं। प्रतिभागी विभागों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में प्रत्येक प्रोजेक्ट की समीक्षा की जाती है और प्रगति राज्य सरकार को सूचित की जाती है। यह उम्मीद की जाती है कि प्रत्येक सांसद वर्ष २०२२ तक एक माडल ग्राम पंचायत के विकास का अग्रणी होगा। समूचे देश में अब तक ६९६ ग्राम पंचायतों को सांसदों द्वारा गोद लिया गया है।

भारतीय उद्यमियों के हौसले हुए बुलंद

भारत में उद्यमशील उर्जा है, इसे पोषित-पल्लवित करने की जरूरत है, भारत हम नौकरी चाहने वाले देश से आगे बढ़कर नौकरी देने वाला देश बनें।

-नरेंद्र मोदी

संकलन चित्र

एनडीए सरकार उद्यमशीलता को बढ़ावा देने पर फोकस कर रही है। 'मेक इन इंडिया' (भारत) पहल भारत में उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के हमारे चार स्तंभों पर आधारित है, ना सिर्फ उत्पादन बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी।

नई कार्यविधि: 'मेक इन इंडिया' (भारत) उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए 'ईज़ ऑफ डूइंग बिजनेस' को सर्वाधिक महत्वपूर्ण फैक्टर के रूप में मान्यता देता है।

नया इंफ्रास्ट्रक्चर: उद्योगों के विकास के लिए आधुनिक और सुविधाजनक इंफ्रास्ट्रक्चर की उपलब्धता सबसे महत्वपूर्ण जरूरत है। सरकार बेहतरीन तकनीक पर आधारित इफ्रास्ट्रक्चर मुहैया कराने के लिए औद्योगिक गलियारों और स्मार्ट सिटीज़ के साथ ही हाई-स्पीड कम्युनिकेशन और एकीकृत लॉ जिस्टिक व्यवस्था विकसित करना चाहती है।

नए क्षेत्र: 'मेक इन इंडिया' ने विनिर्माण, इंफ्रास्ट्रक्चर और सेवा गतिविधियों में २५ क्षेत्रों को चिन्हित किया है और उनकी विस्तृत जानकारी सभी संबंधित पक्षों को दी जा रही है।

नई सोच: उद्योग सरकार को एक रेग्युलेटर के रूप में 'मेक इन इंडिया' का मकसद उद्योगों के साथ सरकार के व्यवहार में आमूलचूल बदलाव लाकर इस सोच को बदलना है। सरकार का दृष्टिकोण एक सुविधा प्रदाता का होगा, एक रेग्युलेटर का नहीं।

सरकार उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए एक तीन आयामी रणनीति को अपना रही है। ये मॉडल हैं जो इन पर काम करेगा: कम्पलाईएंसेज़, कैपिटल और कॉन्ट्रैक्ट एनफोर्समेंट।

कम्पलाईएंसेज़ (स्वीकृति):

भारत ने वर्ल्ड बैंक की 'ईज़ ऑफ डूइंग बिजनेस' रैंकिंग में १३०वां स्थान पाकर तेजी से उन्नति की है। आज एक बिजनेस शुरू करना पहले किसी भी समय के मुकाबले कहीं आसान है। अनावश्यक स्वीकृतियों को खत्म कर दिया गया और कई मंजूरियां ऑनलाइन पाई जा सकती हैं।

इंडस्ट्रियल लाइसेंस (आईएल) और इंडस्ट्रियल आंत्रप्रन्योर मेमोरैंडम (आईईएम) के लिए आवेदन करने की प्रक्रिया को ऑनलाइन कर दिया गया, अब ये सुविधा उद्यमियों के लिए २४७ आधार पर उपलब्ध है। करीब २० सेवाएं एकीकृत हुई हैं और वो विभिन्न सरकारों और सरकारी एजेंसियों से मंजूरियां पाने के लिए एक सिंगल विंडो पोर्टल की तरह काम कर रही है।

भारत सरकार ने राज्य सरकारों द्वारा कारोबारी सुधारों के कार्यान्वयन का एक मूल्यांकन कराया, यह मूल्यांकन वर्ल्ड बैंक ग्रुप और केपीएमजी के सहयोग से किया गया, इस रैंकिंग से राज्यों को एक दूसरे से सीखने और सकसेज़ स्टोरीज़ को दोहराने का अवसर मिलेगा, इस तरह पूरे देश में कारोबार के लिए लिहाज से नियामक माहौल तेजी से सुधर रहा है।

सरकार ने भारत में निवेश को बढ़ावा देने के लिए कई क्षेत्रों में भारत के एफडीआई नियमों को भी उदार बनाया है।

कैपिटल (पूंजी):

भारत में करीब ५.८ करोड़ गैर-कॉर्पोरेट उद्यमी १२.८ करोड़ नौकरियां देते हैं। इनमें से ६०% ग्रामीण इलाकों में हैं। ४०% से अधिक के मालिक पिछड़े वर्गों और १५% के मालिक अनुसूचित जाति और जनजाति से हैं, लेकिन उनके वित्तपोषण में बैंकों के कर्ज की हिस्सेदारी मामूली सी है, इनमें से ज्यादातर को कभी बैंक से कोई कर्ज नहीं मिला। दूसरे शब्दों में अर्थव्यवस्था के सर्वाधिक रोजगार देने वाले क्षेत्र को सबसे कम कर्ज मिला, इस परिदृश्य को बदलने के लिए सरकार ने प्रधानमंत्री मुद्रा योजना और मुद्रा बैंक की शुरुआत की, इसकी शुरुआत छोटे उद्यमियों को कुछ गिरवी रखे बिना सस्ता कर्ज उपलब्ध कराने के उद्देश्य से की गई, जिन्हें आमतौर पर अत्यधिक ब्याज दरों का भुगतान करना पड़ता था। इसकी शुरुआत के थोड़े ही समय में करीब ६५,००० करोड़ रुपये के १.१८ करोड़ ऋणों को मंजूरी दी गई।

अग्र क्रान्ति लाना है सारे विश्व में तुम्हें छा जाना है
महाराजा अग्रसेन की जन्म जयंती पर हार्दिक शुभकामनायें
Ganesh Jindal
Mob. : 9932763051
Barduary
Harischandrapur, Near SBI Barduary,
Dist- Malda, West Bengal, Bharat - 723101

बिजय कुमार जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष - मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारत का एक राज्य प. बंगाल की राजधानी कोलकाता के इंटाली में गांधी विद्यालय के छात्रों ने प्रतिज्ञा ली कि आज से हम जब भी हम अपने मित्रों, परिवारों या अपने संगे-संबंधियों का अभिवादन 'जय भारत' से ही करेंगे (प्रस्तुत चित्र)

दिनांक 13 सितंबर 2022 | प्रांगण गांधी विद्यालय कोलकाता | प्रस्तुति :- मैं भारत हूँ

दूसरों का हित जिनके हृदय में बसता
उनको जग में कुछ मुश्किल नहीं होता
सबको मिले सुख और शांति अपार
ऐसे हमारे महाराजा अग्रसेन का है प्यार

pcm™
PROTECTING YOUR HEALTH & WEALTH

ASWANI KUMAR AGARWAL (DIR)
Mob. : 97331 98303

TOLL FREE NO : 18001207118

Pest Control Management Private Limited

Regd. Office :
3J, Santosh Garden, 8 PC Sarkar Sarani,
Kolkata, West Bengal, Bharat - 700 019

Admin Office :
Agarwal House, Nivedita Complex,
Nivedita Road, Pradhan Nagar,
Po.Siliguri, Dist. Darjeeling, West Bengal, Bharat - 734003

e-mail : pcmindia1991@gmail.com | www.pcmonline.in

OUR SERVICES : PEST CONTROL & SANITIZATION / DISINFECTION

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

अग्रसेन तो ज्योति किरण हैं मानवता की मूरत हैं
उनकी वाणी अजर अमर है आज की जरूरत है
महाराजा अग्रसेन जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं

Ramawtar Ramsisaria
Mob. : 9830063496

Shyam Textiles Ltd.

156, Mahatma Gandhi Road, 2nd Floor, Room No.203,
Kolkata, West Bengal, Bharat- 700007
Ph. : 033-22189041, e-mail : shyamtextiles@yahoo.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

भारत की शान हिंदी है महान-बिजय कुमार जैन

महाराजा अग्रसेन ५१७६ वाँ जयंती पर्व

वर्तमान में जहाँ राजस्थान व हरियाणा राज्य हैं किसी समय इन राज्यों के बीच सरस्वती नदी बहती थी, इसी सरस्वती नदी के किनारे प्रतापनगर नामक एक राज्य था। भारतेन्दु हरिशचन्द्र के अनुसार-मांकिल ऋषि जिन्होंने वेद-मंत्र की रचनाएं की थी, की परम्पराओं में राजा धनपाल हुए। धनपाल ने प्रतापनगर राज्य बसाया था। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा लिखित महालक्ष्मी व्रत कथा और गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.सत्यकेतु विद्यालंकार द्वारा रचित 'अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास' में छपा है कि राजा धनपाल की छठी पीढ़ी में महाराजा वल्लभ प्रतापनगर के शासक बने। महाराजा वल्लभ का काल महाभारत के काल के आसपास का माना जाता है।

महाराजा वल्लभ के घर अग्रसेन और शूरसेन नामक 2 पुत्र हुए, युवा अवस्था में पहुंचने पर अग्रसेन प्रतापनगर की शासन व्यवस्था को देखते थे और शूरसेन सैन्य संगठन के कार्य को देखते थे, उनके राज्य में चारों और सुख-शांति थी। दोनों भाईयों में बहुत प्रेम था, अन्य राज्यों में उनके प्रेम के उदाहरण दिए जाते थे। अग्रसेन के जन्म के समय गर्ग ऋषि ने महाराजा वल्लभ से कहा था कि यह बहुत बड़ा राजा बनेगा, इनके राज्य में एक नई शासन व्यवस्था उदय होगी और हजारों-हजार वर्ष बाद भी इसका नाम अमर रहेगा।

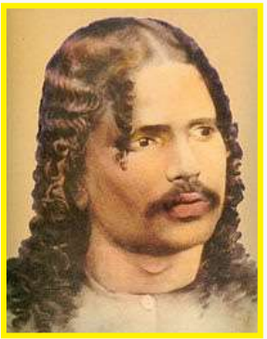

भारतेंदु हरिश्चंद्र

माधवी स्वयंवर : अग्रसेन ने जब युवा अवस्था में प्रवेश किया तब नागलोक के राजा कुमुद के यहां से राजकुमारी माधवी के स्वयंवर का समाचार आया, महाराजा ने अपने दोनों पुत्रों अग्रसेन और शूरसेन को इस स्वयंवर में भाग लेने के लिए भेजा, इस स्वयंवर में भू-लोक के ही नहीं अपितु देवलोक से भी अनेक राजकुमार भाग लेने आए थे, इन्द्र भी उनमें से एक थे, राजकुमारी माधवी ने जब स्वयंवर भवन में प्रवेश किया तो उसकी रूप-राशी को देखकर इन्द्र स्तब्ध रह गए, इन्द्र ने देखा कि देवलोक की अप्सराएँ भी राजकुमारी माधवी के सामने कुछ भी नहीं है। स्वयंवर में आए राजाओं व राजकुमारों का राजकुमारी से परिचय समाप्त होने के पश्चात अग्रसेन के गले में स्वयंवर की माला डाल दी गई। नागराज कुमुद अति प्रसन्न हुए। महलों में संख ध्वनि हुई। स्वयंवर में आए राजाओं व राजकुमारों ने अपनी ओर से बधाई और शुभकामनाएँ दीं, किन्तु दूसरी ओर इन्द्र कुपित होकर स्वयंवर स्थान से उठकर चले गए, उन्हें लगा कि माधवी ने अग्रसेन का वरण कर उनका अपमान किया है। महाराजा वल्लभ को भी प्रतापनगर समाचार भेजा गया। महाराजा वल्लभ अति प्रसन्न मन से बारात लेकर नागलोक पहुँचे, इस विवाह से नाग एवं आर्य कुल का नया गठबंधन हुआ था।

देवलोक पहुँचकर इन्द्र ने मन ही मन अग्रसेन से राजकुमारी माधवी को प्राप्त करने का षड़यंत्र रचा, एक तरफ नागलोक में अग्रसेन और माधवी का विवाह हो रहा था, वहीं दूसरी ओर इन्द्र अपने अनुचरों से प्रतापनगर में वर्षा नहीं करने का आदेश दे रहे थे, इन्द्र का मानना था कि जब राज्य में वर्षा नहीं होगी तो सूखे से जनता में त्राहि-त्राहि मचेगी। महाराजा वल्लभ वर्षा का अनुष्ठान करेंगे तब उनके सामने माधवी को मुझे सौंपने की शर्त रख दूंगा।

इन्द्र से संघर्ष : प्रतापनगर में भयंकर अकाल पड़ा, वहां पर त्राहि-त्राहि मच गई, राजा वल्लभ को जब इन्द्र के षड़यंत्र का पता चला तो उन्होंने इन्द्र से संघर्ष करने का निर्णय लिया। अग्रसेन और शूरसेन ने अपने दिव्य शास्त्रों का संज्ञान कर प्रतापनगर को विपत्ति से बचाया। दिव्य अस्त्रों से वर्षा तो खूब हुई लेकिन **शेष पृष्ठ १३ पर...**

पृष्ठ १२ से ... समस्या का स्थायी समाधान नहीं था? अग्रसेन के मन में एक विचार पैदा हुआ कि मेरे कारण राज्य संकट में आ गया है, अतः मेरा यह धर्म बनता है कि मैं समस्या का स्थायी समाधान करूँ। अग्रसेन ने भगवान शंकर की आराधना करने के लिए वन में जाने का निश्चय कर लिया।

शंकर एवं महालक्ष्मी की आराधना : अग्रसेन ने अपनी भार्या माधवी से सारी बातें कहीं और यह भी कहा कि वह राज्य की सुख-शांति के लिए प्रतापनगर छोड़ेंगे। माधवी ने भी उनके साथ जाने का निश्चय सुनाया किन्तु अग्रसेन ने कहा कि मेरे कारण जो कष्ट राज्य में आया है उसे मैं ही दूर करूँगा। अग्रसेन के संकल्प की जानकारी जब राजा वल्लभ को हुई तो वह बहुत दुःखी हुए उन्होंने अग्रसेन को समझाया कि इस वृद्ध अवस्था में पिता को छोड़कर नहीं जाना चाहिए। अग्रसेन अपने संकल्प के धनी थे, उन्होंने पिता से अनुरोध किया कि छोटा भाई सूरसेन यहां है, वह आपके साथ राज्य के कार्य को देखेगा, माधवी माता-पिता की सेवा में यहीं रहेगी।

भगवान शंकर का नाम लेकर अग्रसेन ने प्रतापनगर से प्रस्थान किया। काशी पहुँचकर वहां पर उन्होंने भगवान शंकर की तपस्या की और उनका आह्वान किया। अग्रसेन की कठिन तपस्या को देखकर भगवान शंकर ने दर्शन दिए। भगवान शंकर ने अग्रसेन से कहा कि तुम्हें अपने राज्य की सुख-समृद्धि के लिए महालक्ष्मी को प्रसन्न करना होगा। महालक्ष्मी समृद्धि की देवी हैं, उनकी समृद्धि के समक्ष इन्द्र भी कुछ नहीं हैं, यह कहकर भगवान शंकर अन्तरध्यान हो गए।

अग्रसेन ने महालक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए तपस्या करने का निश्चय किया। महालक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए एक विशाल यज्ञ किया गया, जिसमें उन्होंने ब्राह्मणों को दान दिया और उसके पश्चात् वन में जाकर महालक्ष्मी जी की तपस्या आरम्भ की। महालक्ष्मी प्रसन्न न हो इसके लिए इन्द्र ने अग्रसेन की तपस्या में अनेक बाधाएँ उत्पन्न की किन्तु अग्रसेन तपस्या में लीन रहे। अनेक कठिनाईयां सहते हुए तपस्या जारी रखी। अग्रसेन की अटूट भक्ति को देखते हुए महालक्ष्मी प्रकट हुईं, उन्होंने अग्रसेन से कहा कि कुमार यह अवस्था तपस्या करने की नहीं है, इस उम्र में तो आपको त्याग के स्थान पर भोग करना चाहिए।

अग्रसेन माता महालक्ष्मी की अनुपम छवि देखकर अपलक निहारते रहे, उस अदभूत आभा के सामने अग्रसेन कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। महालक्ष्मी ने पुनः कहा, 'हे राजकुमार! तुम्हारी कठिन साधना पूर्ण हुई, संकट के दिन बीत गए, वरदान मांगो' अग्रसेन बोले 'हे मातेश्वरी आप सारे संसार का कल्याण करने वाली हैं, आप परमशक्ति हैं, आपसे क्या छुपा हुआ है, आप शक्ति की प्रतीक हैं एवं भक्ति की दाता हैं, मैं आपको बार-बार नमन करता हूँ'

महालक्ष्मी बोली, 'हे अग्रसेन! तुम यह कठिन तपस्या का मार्ग त्यागकर ग्रहस्थ धर्म में पुनः प्रवेश करो, इसी में तुम्हारा कल्याण है। मैं तुम्हें वरदान देती हूँ कि तुम्हारे सभी मनोरथ सिद्ध होंगे, तुम्हारे द्वारा सबका मंगल होगा।'

इस पर अग्रसेन बोले, 'हे मातेश्वरी! मेरी समस्या यह है कि इन्द्र ने मेरे राज्य में वर्षा बंद कर अकाल की काली छाया से सबको दुखी कर रखा है'

महालक्ष्मी ने कहा, 'इन्द्र को अमरत्व प्राप्त है, साथ ही साथ वह ईर्ष्यालु भी है। आर्य और नागवंश की संधि और राजकुमारी माधवी के सौन्दर्य ने उसको दुःखी कर दिया है, तुम्हें कूटनीति अपनानी होगी, कोलापुर के राजा ने अपनी पुत्री के लिए स्वयंवर रचा है, कोलापुर के राजा भी नागवंशी हैं, यदि तुम उनकी पुत्री का वरण कर लेते हो तो नागराज कुमुद के साथ-साथ कोलापुर नरेश की महीरथ शक्तियाँ भी तुम्हें प्राप्त हो जाएंगी, इन शक्तियों के समक्ष इन्द्र को तुम्हारे सामने आने के लिए अनेक बार सोचना पड़ेगा? तुम निडर होकर अपने नए राज्य की स्थापना करो, **शेष पृष्ठ १४ पर...**

अग्र क्रान्ति लाना है सारे विश्व में तुम्हें छा जाना है
महाराजा अग्रसेन की जन्म जयंती पर हार्दिक शुभकामनायें

Rajkumar Agarwal
Mob: 98320 65195
Shiv Builder Center
Jalpai More, Burdwan Road,
Po.Siliguri, Dist.Darjeeling,
West Bengal, Bharat - 734005

अग्रसेन तो ज्योति किरण हैं मानवता की मूरत है
उनकी वाणी अजर अमर है आज की जरूरत है
महाराजा अग्रसेन जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं

Narayan Prasad Agarwal
3rd Floor, Orchid Complex,
S.F.Road, Landmark- Sunehri Saree, Siliguri,
Dist. Darjeeling, West Bengal, Bharat-734005
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पृष्ठ १३ से ... तुम्हारे राज्य में कोई भी दुःखी नहीं होगा, 'यह कहकर महालक्ष्मी अन्तरध्यान हो गईं, अग्रसेन बार-बार उस पावन भूमि को प्रणाम करने लगे, जहाँ पर माता महालक्ष्मी के चरण-कमल पड़े थे, उसी समय महर्षि नारद प्रकट हुए। नारद को देख अग्रसेन ने प्रणाम किया। महालक्ष्मी द्वारा दिए वरदान से नारद को अवगत कराया और बोले, 'हे महर्षि! माता महालक्ष्मी के आदेश को पालन करने में मेरा मार्ग दर्शन करें और कोलापुर की यात्रा के लिए मुझे भी अपने साथ ले चलें नारद ने अग्रसेन को साथ लेकर कोलापुर के लिए प्रस्थान किया।

सुन्दरावती स्वयंवरः अग्रसेन महर्षि नारद के साथ कोलापुर पहुँचे। कोलापुर में नागराज महीरथ का शासन था, उन्होंने देखा कोलापुर, इन्द्र की अल्कापुरी को भी मात दे रहा था। सम्पूर्ण कोलापुर नगरी राजकुमारी सुन्दरावती के स्वयंवर में आनेवाले अतिथियों के सम्मान में जुटी हुई थी। नागकुमारी की चर्चा जगह-जगह हो रही थी। नागरिक बातों ही बातों में उस व्यक्ति को भाग्यशाली बता रहे थे जिसको राजकुमारी सुंदरावती वरण करने वाली थी।

कोलापुर नगर के मध्य पहुंचने पर महर्षि नारद ने अग्रसेन से कहा कि अब आप अकेले ही रंगशाला में जाएँ। महर्षि को प्रणाम कर अग्रसेन स्वयंवर वाले स्थान पर पहुँचे, अग्रसेन ने वहाँ पर देखा कि भिन्न-भिन्न देशों के राजकुमार स्वयंवर में आए हुए हैं। वेष वदलकर अनेक गंधर्व व देवता भी राजकुमारी को वरण करने के लिए लालायित होकर इस स्वयंवर में भाग ले रहे थे। शूरसेन भी वहां विराजमान थे। अग्रसेन को देखते ही शूरसेन अपने आसन से खड़े हो गए, उन्होंने अपने अग्रज को प्रणाम कर बैठने के लिए स्थान दिया। अग्रसेन ने शूरसेन से महालक्ष्मी द्वारा दिए गए आशीर्वाद की चर्चा की और शूरसेन को इस बात के लिए आश्वस्त किया कि सुन्दरावती के साथ विवाह करने से माधवी के साथ कोई अन्याय नहीं होगा, मेरे लिए माधवी और सुन्दरावती दोनों ही बराबर रहेंगी। शूरसेन ने अपने अग्रज को कहा कि वे अब स्वयंवर में भाग नहीं लेंगे,

इसी बीच नागकन्या सुन्दरावती ने रंगशाला में प्रवेश किया। कोलापुर राज्य के महामंत्री ने वहां उपस्थित सभी स्वयंवर प्रतियोगियों का परिचय कराया। नागकन्या सुन्दरावती ने जब अग्रसेन को देखा तो ऐसा लगा कि वह ही उसके स्वामी हैं, जिनको वह हर जन्म में वरण करती आई है। मन ही मन नागकन्या ने भगवान शंकर को प्रणाम किया और अग्रसेन के आसन की ओर बढ़ चली। अग्रसेन के समक्ष जाकर सुन्दरावती ने अपनी वरमाला उनके गले में डाल दी। वरमाला डालते ही महल में नगाड़े बजने लगे, शंख की ध्वनि हुई। शूरसेन ने बड़े भाई अग्रसेन को प्रणाम कर बधाई दी।

नागराज महीरथ ने तुरन्त ही देश वाहक को प्रतापनगर भेजा और महाराज वल्लभ से बारात लेकर आने का अनुरोध किया। अग्रसेन और सुन्दरावती के विधिवत विवाह के पश्चात विदाई के समय नागराज कुमुद और नागराज महीरथ ने महाराजा वल्लभ से कहा, 'एक ही परिवार में दो-दो नाग कन्याओं का वरण कर आपने नागवंश के प्रति जो स्नेह दिखाया है, उसके लिए हम आपके हमेशा आभारी रहेंगे, हम दोनों आपके साथ संकट की इस घड़ी में कंधा मिलाकर चलने का वचन देते हैं, यह दो परिवारों का मिलन नहीं अपितु दो संस्कृतियों का मिलन है'

महाराजा वल्लभ ने दोनों नाग राजाओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा, 'अग्रसेन के पैदा होने के समय ही यह बात सामने आ गई थी कि मेरा पुत्र संसार में अपनी छाप छोड़ेगा, आप लोगों से मिलन, इसी श्रृंखला की कड़ी है' महाराजा वल्लभ की बातें सुनकर दोनों नाग राजाओं ने उनके प्रति आभार व्यक्त करते हुए पुनः प्रणाम किया, इसके पश्चात महाराजा वल्लभ ने सभी के साथ प्रतापनगर के लिए प्रस्थान किया।

अग्रसेन इन्द्र मैत्री : दो-दो नागवंशों से संबंध स्थापित करने के बाद महाराजा वल्लभ के राज्य में अपार सुख-समृद्धि व्याप्त हो गई। शासन व्यवस्था से प्रजा भी संतुष्ट थी, वहां महाराजा वल्लभ और उनकी पत्नी महारानी अपने दोनों पुत्रों की सेवा से हमेशा प्रसन्न रहते थे। प्रतापनगर की सुख-समृद्धि देखकर इन्द्र के मन में पैदा हुई ईर्ष्या की भावना और भी बलवान हो रही थी लेकिन इन्द्र का वश नहीं चल रहा था, इन्द्र को ईर्ष्या की अग्नि में जलते देख उसकी पत्नी शची ने कहा कि आपको अग्रसेन से मैत्री सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए, आप माधवी को अपनी बहन बनाएं और अग्रसेन को मित्र, इससे जहां आपके मन की विरह व्यथा भी समाप्त होगी और प्रतापनगर और देवलोक के बीच प्रतिदिन होनेवाले विवाद भी समाप्त हो जायेंगे।

इन्द्र को अपनी रानी शची का सुझाव अच्छा लगा, उन्होंने महर्षि नारद को बुलाया और अग्रसेन से संधि करने की बात कही। महर्षि नारद ने कहा, 'देव आपका सुझाव बहुत अच्छा है, आज जब सुर-असुर के संघर्ष से ही देवलोक त्रस्त है ऐसे में प्रतापनगर से संधि करना देवलोक के हित में ही होगा'

इन्द्र का संदेश लेकर महर्षि नारद प्रतापनगर पहुँचे। महर्षि नारद को अपने बीच पाकर राजा वल्लभ अति प्रसन्न हुए, उन्होंने उनको उचित सम्मान **शेष पृष्ठ १५ पर...**

अग्रसेन तो ज्योति किरण हैं मानवता की मूरत है
उनकी वाणी अजर अमर है आज की जरूरत है
महाराजा अग्रसेन जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं

Chandra Prakash Sinhal
Mob. : 9832375446 / 8170910986

Silver Queen Jewellers

Pioneer of Hallmark Jewellery in North Bengal
Certified Jewellers ISO 9001-2015
Unique, Artistic & Exclusive Jewellery Collections in Largest variety of
◆ Gold ◆ Diamond ◆ Kundan ◆ Jadau
◆ Polki ◆ Ruby ◆ Fancy & Designers Sets
Gold Exchange Facilities are Always Available
Our Philosophy is Simple :
◆ QUALITY ◆ SAVINGS
◆ PEACE OF MIND ◆ BUY BACK
GUARANTEED
SETH SRILAL MARKET,SILIGURI, DIST.-DARJILING, WEST BENGAL, BHARAT - 734001
Ph. : 0353-2430964 / 2533898 (0), 2513919(R) E-mail : silverqueenjewellers1984@gmail.com

पृष्ठ १४ से... के साथ आसन पर बैठाया और अभिनन्दन किया। महर्षि नारद ने महाराजा वल्लभ से कहा, 'मैं आपके लिए शुभ समाचार लेकर आया हूँ' महर्षि नारद ने इन्द्र का संधि प्रस्ताव महाराजा वल्लभ के सामने रखा और कहा कि इन्द्र माधवी से क्षमा मांगने के लिए तैयार है। नारद का प्रस्ताव सुनकर महाराजा वल्लभ का मुख कमल की तरह खिल उठा, उन्होंने प्रस्ताव पर अपनी सहमति जताते हुए, इन्द्र को प्रतापनगर आने का निमंत्रण दिया, महाराजा वल्लभ का निमंत्रण लेकर नारद ने देवलोक के लिए प्रस्थान किया।

इन्द्र के आगमन पर प्रतापनगर को बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाया गया। सुगंधित फूलों से सारा प्रतापनगर महक रहा था, विभिन्न रंगों के झरने बह रहे थे। स्वयं अग्रसेन ने नगर के बाहर मुख्य द्वार पर इन्द्र की अगवानी की, उन्हें बहुत ही सम्मान के साथ राजमहल में लाया गया।

महाराजा वल्लभ ने अपने साथ इन्द्र के लिए एक नया आसन लगवाया था, इन्द्र को अपने बराबर बैठाकर महाराजा वल्लभ ने यह संदेश दिया कि उनके मन में इन्द्र के प्रति कोई भी दुर्भाव नहीं है, इन्द्र ने अपनी भूलों के प्रति खेद प्रकट करते हुए माधवी से क्षमा मांगी और कहा कि आज जो संधि हमलोगों के बीच में हुई है वह संधि आपके वंशजों को हमेशा एक विशेष स्थान दिलाती रहेगी, (आज भी अग्रवाल समाज में जब विवाह होता है तो वर के द्वारा छत्र व चंवर का प्रयोग उसी परम्परा का प्रतीक है)

अग्रसेन और इन्द्र आपस में गले मिले, माधवी ने इन्द्र की आरती उतारी। आरती उतार कर उनका तिलक किया, इन्द्र ने उन्हें अखंड सौभाग्यवती रहने और पुत्रवती होने का वर दिया। इन्द्र ने माधवी को आशीर्वाद दिया कि उसके मन में अग्रसेन के प्रति हमेशा अनुराग बना रहे, इसके साथ ही इन्द्र ने वहां से विदा ली, महाराजा वल्लभ, अपने दोनों पुत्रों के साथ महल से बाहर आये और इन्द्र को विदाई दी।

शूरसेन विवाह : इन्द्र और अग्रसेन की मैत्री के समाचार से प्रतापनगर के अधिपत्य का प्रभाव बढ़ा। मंदाकिनी के किनारे बसे यक्ष राजा को इन्द्र-अग्रसेन मैत्री का संवाद प्राप्त हुआ, उसने महाराजा वल्लभ से अपनी पुत्री सुपात्रा का शूरसेन से विवाह की चर्चा की, युवराज अग्रसेन ने कहा कि प्रतापनगर और नागलोक की संधि से हम शक्तिशाली हुए हैं, यदि यक्षराज की पुत्री का शूरसेन से विवाह होता है तो हिमालय पर्वत के इलाके में बसे सभी राज्य प्रतापनगर का लोहा मानने लग जायेंगे। महाराजा वल्लभ ने यशराज के प्रस्ताव को तुरन्त ही स्वीकार कर लिया, कुछ ही समय पश्चात शूरसेन का विवाह यक्ष कन्या सुपात्रा के साथ हो गया, इस तरह से महाराजा वल्लभ ने विभिन्न संस्कृतियों के साथ संबंध स्थापित कर एक नए इतिहास की रचना की।

महाराजा वल्लभ वृद्ध होते जा रहे थे, अतः उन्होंने निश्चय किया कि वह प्रतापनगर का राज्य अग्रसेन का सौंपकर वन की ओर प्रस्थान करेंगे, उन्होंने अग्रसेन और शूरसेन को बुलाकर अपना निश्चय बताया, इस पर अग्रसेन ने कहा, 'मैं पहले पूरे आर्यवर्त का भ्रमण करूँगा, उसके पश्चात् ही राज्य का भार सम्भालने के लिए सोचुँगा' अग्रसेन ने अपने पिता से अनुरोध किया कि 'जब तक मैं बाहर रहूँ शूरसेन ही राज्य की देखभाल करेगा' महाराजा वल्लभ और उनकी पत्नी ने अनिच्छा से अग्रसेन, माधवी और सुन्दरावती को भारत दर्शन के लिए विदा किया। शेष पृष्ठ १६ पर...

पृष्ठ १५ से... अग्रसेन ने अपनी दोनों पत्नियों के साथ दक्षिण के सभी तीर्थ स्थानों की यात्रा की, इस यात्रा के दौरान उन्हें अनेक प्रकार के अनुभव हुए। यात्रा के मध्य ही उन्हें महाराजा वल्लभ के अस्वस्थ होने का समाचार मिला, पिता के कुशल-मंगल रहने की प्रार्थना करने के साथ-साथ अग्रसेन ने अपनी यात्रा अधूरी छोड़कर प्रतापनगर के लिए प्रस्थान किया।

महाराजा वल्लभ का निधन : पिता के कुशलमंगल होने की भगवान से प्रार्थना करते हुए अग्रसेन जल्द प्रताप नगर पहुँचने को उत्सुक थे, वह कम से कम पड़ाव डालते हुए प्रतापनगर पहुँचे। अग्रसेन एवं दोनों रानियों को देखकर महाराजा वल्लभ और महारानी अति प्रसन्न हुए। महाराजा वल्लभ का बहुत अच्छे वैद्य से उपचार चल रहा था किन्तु होनी को कौन टाल सकता है। महाराजा वल्लभ का अंतिम समय आ गया था, उन्होंने अपने सभी परिजनों को बुलाकर उनसे विदा मांगी और अपना नश्वर देह त्याग दिया।

गया में पिण्डदान : अग्रसेन ने शासन के सभी कार्य शूरसेन को सौंपकर महाराजा वल्लभ की प्रथम पुण्य तिथि पर गया में श्राद्ध करने का निश्चय किया, एक बार पुनः माता वल्लभी के साथ, अग्रसेन और दोनों रानियों ने प्रतापनगर से विदा ली, रास्ते में अनेक तीर्थों के दर्शन करते हुए वे सेवकों के साथ गया पहुँचे। गया पहूँच कर अग्रसेन ने सरयू नदी के किनारे अपना पड़ाव डाला और गौड़ पुरोहित को बुलाकर अपने पिता का पिण्डदान किया, पूरे श्राद्ध पक्ष में उन्होंने अपने सभी पितरों को आह्वान कर पिण्ड दान किया, अग्रसेन अति प्रसन्न थे कि उन्होंने अपने सभी पितरों को पिण्ड दान कर बार-बार जन्म लेने वाली योनि से मुक्त करा दिया।

लोहागढ़ यात्रा : गया से प्रारम्भ करते समय माता वल्लभी ने अग्रसेन को लोहागढ़ में जाकर महाराजा वल्लभ को पिण्डदान देने का सुझाव देते हुए कहा कि लोहागढ़ में पिण्डदान के बिना महाराजा वल्लभ को योनिचक्र से मुक्ति नहीं मिलेगी, अग्रसेन ने लोहागढ की ओर प्रस्थान किया, लोहागढ़ में जाकर उन्होंने एक माह का प्रवास किया, वहां पर उन्होंने सभी कर्मकाण्ड पूरे कर अपने पिता का पिण्डदान किया।

एक माह की लम्बी साधना से महाराजा वल्लभ ने उन्हें दर्शन दिए और कहा! हे पुत्र तुम्हारी साधना व लोहागढ़ में पिण्डदान से मुझे बार-बार जन्म लेने वाली योनि से मुक्ति मिली है और मुझे स्वर्ग में स्थान प्राप्त हो गया है, मेरा आशीर्वाद हर समय तुम्हारे साथ है, तुम यहां से आगे बढ़ो और सरस्वती व यमुना नदी के बीच एक वीर भूमि तुम्हें मिलेगी, उसी वीर भूमि पर एक नए राज्य का निर्माण करो' माता वल्लभी, अग्रसेन, दोनों रानियां माधवी व सुन्दरावती ने महाराजा वल्लभ को प्रणाम किया तथा लोहागढ़ से उस वीर धरा को खोजने चले, जिसकी महाराजा वल्लभ ने चर्चा की थी।

अग्रोहा निर्माण : लोहागढ़ सीमा से निकलकर अग्रसेन ने पंचनद (वर्तमान में पंजाब) राज्य में प्रवेश किया, पंचनद में एक स्थान पर उन्होंने एक सिंहनी को शावक (हाल ही में जन्मा शेर बालक) को साथ खेलते देखा। अग्रसेन अपने गजराज पर बैठे उस शावक को देख रहे थे अचानक ही शावक उछला और गजराज के मस्तक पर आ बैठा। शावक को अचानक अपनी ओर उछल कर आते देख महावत भी नीचे गिर पड़ा। अग्रसेन ने शावक को उछलते हुए, महावत को गिरते हुए देखकर उन्हें अपने पिता की वह बात याद आ गई जिसमें उन्होंने वीर धरा पर एक नया राज्य बसाने की बात कही थी, वे वहीं गजराज से उतर पड़े, अपने साथ चल रहे ज्योतिषियों और पंडितों से उस स्थान के बारे में चर्चा की, सभी ने एकमत से कहा कि यह भूमि न केवल वीरभूमि है बल्कि चारों और हरी-भरी होने से कृषि उपज भी बहुत अच्छी होगी। अग्रसेन ने अपने सहयोगियों के साथ आसपास के क्षेत्रों का भी भ्रमण किया और उन्होंने देखा कि हर स्तर पर इस भूमि पर एक सुव्यवस्थित राज्य की स्थापना हो सकती है।

प्रताप नगर से शूरसेन को बुलाया गया। पुरोहित व ऋषियों को बुलाकर सबसे पहले यज्ञ किया। यज्ञ के पश्चात भवन निर्माण का कार्य प्रारम्भ हुआ। भवन निर्माण के कार्य प्रारम्भ के साथ ही उस वीर प्रसूता भूमि पर अग्रसेन ने अपना ध्वज फहराया। ध्वज फहराने के साथ ही अग्रसेन महाराजा बन गए, उन्होंने अपने भाई शूरसेन को तिलक कर प्रतापनगर प्रस्थान का आदेश दिया और कहा, 'आज से प्रतापनगर के तुम ही स्वामी हो, वहां के शासक के रूप में राज्य करो। राज्य व्यवस्था ऐसी सुदृढ़ और सुव्यवस्थित बनाओ जिससे राज्य की रक्षा के साथ-साथ प्रजा भी सुख-शांति से रह सके' महाराजा अग्रसेन का आशीर्वाद पाकर शूरसेन ने प्रतापनगर के लिए प्रस्थान किया।

महाराजा अग्रसेन अपनी नई राजधानी को बसाने में पूरा **शेष पृष्ठ १७ पर...**

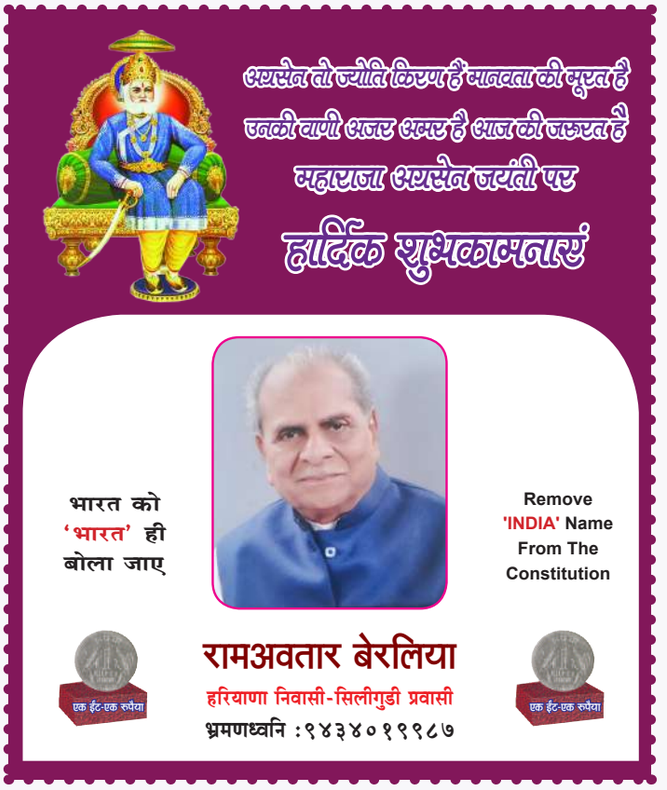

पृष्ठ १६ से ... ध्यान दे रहे थे। हर आगंतुक उनके लिए एक सम्मानित व्यक्ति था, लोकोक्ति एवं भाटों के गीतों के अनुसार उस समय महाराजा अग्रसेन ने 18 बस्तियां बसाई थीं। ऋषि-मुनियों और ज्योतिषियों की सलाह पर नए राज्य का नाम आग्रेयगण (जिसे आज अग्रोहा के नाम से जाना जाता है) रखा गया और राजधानी का नाम अग्रोदक रखा गया। महाराजा अग्रसेन ने सभी प्रजाजनों को सुखी और सम्पन्न बनाने के लिए शासन से सभी तरह की सुख-सुविधाएँ उपलब्ध करवाई। प्रजाजन भी महाराजा अग्रसेन के प्रति पूरी तरह से समर्पित थे। राज्य में 'जिओ और जीने दो' की कहावत पूरी तरह से चरितार्थ हो रही थी। महाराजा अग्रसेन की शासन व्यवस्था से पड़ोस के दूसरे राज्य भी अपने यहां पर अग्रोदक के समान नई व्यवस्था लागू कर रहे थे, अपने नए राज्य में अग्रसेन बहुत ही प्रसन्न थे।

विश्वमित्र का आगमन : महाराजा अग्रसेन राजदरबार में बैठे हुए थे, मंत्रीगण आपस में चर्चा कर रहे थे। महाराजा अग्रसेन शासन का काम-काज तो बराबर देखते ही थे, लेकिन रह-रह कर उन्हें परशुराम का श्राप याद आ जाता। श्राप के कारण वह चिंतित से रहने लगे थे एक दिन दरबान ने आकर ऋषि विश्वमित्र के आगमन की सूचना दी। ऋषि के आगमन की सूचना पाकर महाराजा अग्रसेन नंगे पांव उनकी अगवानी के लिए बाहर आए। उनको स-सम्मान लाकर राजदरबार के उच्च आसन पर बैठाया और उनकी चरण वंदना की। ऋषि विश्वमित्र ने देखा कि महाराजा अग्रसेन के मन में जितना उत्साह है उतना उनके चेहरे पर तेज नहीं है?

ऋषि विश्वमित्र ने महाराजा अग्रसेन से पूछा कि 'नरेश आपके मुख-मण्डल पर जो तेज होना चाहिए वह क्यों नहीं है' महाराजा अग्रसेन ने परशुराम से सामना होने व उनके द्वारा दिए गए श्राप की सारी घटना बताई, ऋषि विश्वमित्र ने कहा कि आर्य शत्रु को आप अपने बुद्धि बल से हराओ न कि शक्ति से, आपको पुनः कुलदेवी महालक्ष्मी की तपस्या करनी होगी और उनसे इस श्राप से मुक्त होने का वरदान मांगना होगा, यही आपकी समस्या का उचित समाधान है, आप यमुना के किनारे दोनों नासुताओं के साथ विष्णुप्रिया का ध्यान करें और उनसे संतान प्राप्ति का वरदान लें।

महालक्ष्मी की आराधना : अग्रसेन ने विश्वमित्र का मार्ग-दर्शन के लिए आभार व्यक्त किया। यमुना के किनारे एक स्वच्छ जगह देखकर महाराजा अग्रसेन ने अपने लिए कुटिया बनवाई, वहां पर सभी ऋषि-मुनियों को निमंत्रित कर एक विशाल यज्ञ किया। यज्ञ सम्पन्न होने के पश्चात महाराजा अग्रसेन और दोनों रानियों ने निराहार रहने का संकल्प कर महालक्ष्मी के ध्यान में बैठ गए।

महाराजा अग्रसेन और दोनों रानियों की कठिन तपस्या को देखकर महालक्ष्मी प्रकट हुईं। महालक्ष्मी ने अग्रसेन से वरदान मांगने को कहा। महाराजा अग्रसेन और दोनों रानियों ने विष्णुप्रिया को प्रणाम कर संतान का आशीर्वाद मांगा। महालक्ष्मी बोली, 'मैं आप लोगों की तपस्या से बहुत प्रसन्न हूँ और अपना आशीर्वाद देती हूँ कि आपको जो संतान प्राप्त होगी वह युगो-युगो तक आपको अमर कर देगी, जब तक आपकी संतान मेरी पूजा करती रहेगी, तब तक आपके परिवार पर मेरी कृपा दृष्टि बनी रहेगी।' महालक्ष्मी का वरदान पाते ही श्राप की काली छाया समाप्त हो गई। महाराजा अग्रसेन, महारानी माधवी और सुन्दरावती तीनों ने आहार ग्रहण किया और अग्रोहा की ओर प्रस्थान करने का निश्चय किया।

बनवास गमनः अश्वमेघ यज्ञ के 108 वर्ष पश्चात महाराजा अग्रसेन ने विभु को शासन व्यवस्था सौंपकर दोनों महारानियों के साथ वन की ओर प्रस्थान कर लिया, अनेकों वर्ष वन में सन्यासी बन कर रहे और उनके पुण्य कार्यों के परिणाम स्वरूप आदिपिता ब्रह्मा ने महाराजा अग्रसेन व दोनों महारानियों को स्वर्ग में स्थायी स्थान प्रदान कर 'अग्रोहा' पर उपकार किया।

अग्रसेन तो ज्योति किरण हैं मानवता की मूरत है
उनकी वाणी अजर अमर है आज की जरूरत है
महाराजा अग्रसेन जयंती पर
हार्दिक शुभकामनाएं

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Remove 'INDIA' Name From The Constitution

Nathmal Chanani
प्रदेश अध्यक्ष : अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन कटक
Tulsipur, Cuttack, Odisha, Bharat - 753008
Mob. : 9937063001

अग्र क्रान्ति लाना है सारे विश्व में तुम्हें छा जाना है
महाराजा अग्रसेन की जन्म जयंती पर
हार्दिक शुभकामनायें

विकास बंसल
भ्रमणध्वनि : 9654367282

- महानगर महामंत्री : धर्मयात्रा महासंघ,
- महानगर गाजियाबाद सह संयोजक : बुद्धिजीवि प्रकोष्ठ, भाजपा
- प्रदेश अध्यक्ष : स्कूल एसोसिएशन ऑफ स्पोटर्स एण्ड कलचरल एक्टिविटी
- आजीवन संरक्षक : वैश्य अग्रवाल सभा इन्दिरापुरम, गाजियाबाद
- आजीवन संरक्षक : नारायण सेवा संस्था, उदयपुर
- संरक्षक : ऑल जोन टाइम्स (समाचार पत्र)
- कार्यकारी महामंत्री : वैश्य अग्रवाल सभा इन्दिरापुरम
- ट्रस्टी : महाराजा अग्रसेन जन कल्याण सेवा ट्रस्ट
- ट्रस्टी : वैश्य समाज, गाजियाबाद
- प्रोपराईटर : विकास बुक एजेन्सी

निवास : के. जी-23, दूसरी मंजिल, कवि नगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत-201002

महाराजा अग्रसेन की जन्म तिथी पर उनके आदर्शों का पालन कर समाज व राष्ट्र को उन्नत करें

समाजवाद एवं लोकतंत्र के प्रणेता, अहिंसा के पुजारी, युग प्रवर्तक शांतिदूत, सुर्यवंशी महाराज अग्रसेनजी, भगवान रामचंद्र कुल की ३४ वीं पीढी में है तथा भगवान श्रीकृष्ण के समकालीन है। करोड़ों अग्रवालों के पितामह श्री अग्रसेनजी की ५१७६ वीं जन्मतिथी सोमवार २६ सितम्बर २०२२ को है, इस पावन जन्म तिथी पर महाराज अग्रसेनजी के प्रेरणाप्रद सिद्धान्तों का अनुसरण करे।

कुछ मुख्यपरियोजनाएं:

१) दिन में शादी करने की प्रथा शुरू करें: मुगल कालीन शासन के पहले शादियां दिन में ही की जाती थी। वैदिक ढंग से की जानेवाली शादियों में सुर्य भगवान का साक्षी होना जरूरी है तथा हवन भी दिन में ही किया जा सकता है। लाईट आदि का खर्चा नहीं लगता तथा घर के सभी लोग इसमें भाग ले सकते हैं, अत: शादी दिन में शुरू करने की प्रथा की जानी चाहिये। शादियां मंदिर या अन्य सात्विक स्थानों पर ही की जानी चाहिये, ताकि शुद्ध वातावरण मिल सके।

२) शादियों में फिजुल खर्ची रोकी जानी चाहिए: बढती फिजुल खर्ची को रोकने के लिए केन्द्रीय सरकार एक विधेयक लाने की सोच रहा है। जम्मू-कश्मीर सरकार ने एक अप्रैल से इस प्रकार का प्रावधान लागू कर दिया है जिसने मेहमानों तथा व्यंजनों की सीमा निर्धारित की गयी है।

३) केक काटने की प्रवर्ती पर रोक: देखा देखी डे संस्कृति बढती जा रही है जो पाश्चात्य ढंग से मनायी जाती है, यहाँ तक की जन्मदिन, संस्कार तथा अन्य सभी उत्सवों पर केक काटने की संस्कृति बढती जा रही है। बर्थडे, सिल्वर जुबली, शादी की सालगिरह आदि उत्सवों की भूमिका बढती जा रही है जिससे काफी फिजूल खर्ची होती है, इन उत्सवों पर परोपकारी व कल्याणकारी गतिविधीयां की जा सकती हैं जिससे समाज का विकास हो, दिखावे व शोबाजी पर किये जानेवाले खर्चे से गरीब बेटियों की शादी की जा सकती है।

४) संसद दीर्घा में चित्र: संसद में हमारे पितामह महाराज अग्रसेन जी का चित्र लगाया जाना चाहिए ताकि जनता को उनके आदर्शों से प्रेरणा मिले।

५) कमजोर वर्ग के लोग आर्थिक सहायता के लिए अग्र बैंक की स्थापना: समाज के जो कमजोर वर्ग हैं उन्हें आर्थिक सम्बल प्रदान कर आजिवीका कमाने में सहयोग किया जाना चाहिए, इसके अलावा जो लोग शिक्षा, चिकित्सा खर्च को वहन नहीं कर सकते हैं उन्हें मदद दी जानी चाहिए। कन्या विवाह के लिए असमर्थ माता-पिता को आर्थिक व अन्य मदद मुहैया कराने की जरूरत है, अभी जो व्यवस्था है उनके तहत हजार-दो हजार रूपये दिये जाते हैं, जो पर्याप्त नहीं होते, वित्तिय सहायता के लिए अग्रसेन बैंक की स्थापना की जानी चाहिए।

६) मेरीज ब्युरो की स्थापना: राष्ट्रीय स्तर की वेबसाईट बनायी जानी चाहिए जिस पर विवाह योग्य लड़के-लड़कीयों का जीवन परिचय हो। विवाह योग्य युवक युवतियों के परिचय बेंक बनाना चाहिए, जिससे सुयोग्य वर-वधू का चयन किया जा सके। सामुहिक विवाह को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, यह व्यवस्था हर जिले स्तर पर होनी चाहिए।

७) रोजगार ब्युरो की स्थापना: समाज के संपन्न लोगों को व्यापार व व्यवसाय के लिए कर्मचारीयों की जरूरत होती है, उसी तरह समाज के नवयुवकों को रोजगार की जरूरत होती है, रोजगार ब्युरो का संग्रह कर दोनों वर्गों को लाभान्वित किया जा सकता है।

८) काऊंसलिंग सेन्टर की स्थापना: भाईयों-भाईयों में झगड़े निपटाने के लिए तथा अन्य व्यावसायिक आर्थिक व पारिवारिक झगड़ों के निवारण के लिए समाज के प्रतिष्ठित लोगों का एक सेल होना चाहिए जो मार्गदर्शन का काम कर सके, इसी तरह सगाई छुटना या विवाह के बाद विवाद हो जाने पर समाज अपनी भूमिका निभा कर सकारात्मक सुलह करा सकता है। बढते अधेड उम्र के लड़के-लड़कियों की भी काऊंसलिंग जरूरी है।

९) गृह निर्माण योजना: जरूरतमंद भाई-बहनों को अफोर्डेबल हाऊसिंग की सुविधा समाज उपलब्ध करा सकता है जिसके तहत लागत भावों पर जरूरतमंद को मकान उपलब्ध कराये जा सकते हैं।

१०) स्व-सुधार संस्था: आर्थिक योगदान के साथ-साथ राजनैतिक तंत्र में योगदान बढाने के लिए पब्लिक स्पीकींग शुरू करें तथा स्व-सुधार कार्यक्रम शुरू कर नये नेताओं का निर्माण किया जा सकता है।

११) युवा व महिला संघ की स्थापना: समाज के युवा वर्ग को मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए एक युवा संघ की स्थापना की जाना चाहिए, यह 'कैरीयर गायडेन्स' सेंटर का काम भी कर सकता है ताकि युवकों का भविष्य दिगदर्शन किया जा सके, इसी तरह महिला विंग की भी स्थापना की जानी चाहिए।

१२) व्यापार उद्योग परकोष्ठ की स्थापना: नये जमाने में उपलब्ध नये व्यापार उद्योग अवसरों की जानकारी व अन्य सहायता प्रदान करने के लिए व्यापार व उद्योग प्रकोष्ठ की स्थापना की जानी चाहिए ताकि समाज के लोगों को जरूरी जानकारी व सहायता उपलब्ध करायी जा सके।

१३) बढती मठाधीशता को रोकें: सामाजिक संस्थाओं के विभीन्न पदों पर एक ही व्यक्ति १५-२० वर्षों तक बना रहता है, जरूरी है परिवर्तन, हर २-३ साल के बाद नेतृत्व बदलता रहे ताकि संस्थाओं में नवचेतना का संचार हो सके।

१४) संस्कार शिविर लगायें: युवा पीढी को भारतीय सभ्यता संस्कृति व प्रकृति से जोड़ने के लिए संस्कार शिबिरों का आयोजन किया जाना चाहिए जिसके द्वारा सांस्कृतिक गौरव व परम्परागत विषयों की जानकारी दी जा सके और सनातन धर्म को आगे बढाया जा सके।

'एक ईंट-एक रुपये' की भावना

सम्पूर्ण भारत में फैलाना चाहिए

महाराज अग्रसेन अपने युग की एक महान विभूति थे, वे एक कुशल राजनीतिज्ञ थे, पराक्रमी योद्धा थे और प्रजा के हितकारी सहृदय राजा थे। अपनी प्रजा एवं राज्य की सुरक्षा के लिये उन्होंने सुरक्षित अग्रोहा नगर बसाया, सुदृढ़ कोट से घिरा नगर, जिसमें करीब सवा लाख से भी अधिक घरों की बस्ती थी, उनके सबल हाथों में प्रजा सुरक्षित थी, इसीलिए नागरिक निश्चिन्त होकर अपने काम-धन्धे में लगे रहते थे। 'अग्रोहा' पूर्णत: वैश्य-राज्य था, व्यापारियों, किसानों, कर्मकारों, शिल्पकारों और उद्योग-धन्धे करने वालों का राज्य।

वैश्य होते हुए भी महाराज अग्रसेन क्षत्रियों से भी अधिक कुशलता से शासन का संचालन करते थे। राज्य दिनों-दिन फल-फूल रहा था। नये-नये उद्योग-धन्धे पनप रहे थे। व्यापार-व्यवसाय उत्तरोत्तर उन्नति कर रहे थे। देश-विदेश में मधुर राजनयिक तथा व्यावसायिक सम्बन्ध स्थापित होते जा रहे थे। दशों दिशाओं से धन-वैभव, सुख-सम्पदा उनके राज्य में बरस रहे थे। 'अग्रोहा' दिन दूनी और रात चौगुनी समृद्धि की ओर बढ़ता ही जा रहा था। अग्रोहा के वैभव और महाराज अग्रसेन की महानता की चर्चा चारों ओर फैल चुकी थी, अन्य राज्यों में बसे वैश्यगण भी इस राज्य की ओर आकर्षित होने लगे, जो सम्पन्न वैश्य अपने को किसी कारणवश कहीं असुरक्षित समझते थे, वे अग्रोहा में आकर बसने लगे।

अन्य राज्यों से उपेक्षित तथा विपन्न वैश्य भी आश्रय पाने के लिए यहाँ आने लगे। वैश्य-नगरी अग्रोहा का विस्तार बढ़ता गया और महाराज अग्रसेन का यश दूर-सुदूर तक फैलता गया।

अग्रोहा में इस प्रकार प्रतिदिन आने वाले वैश्यों के कारण राज्य के सामने उनके पुनर्वास की समस्या खड़ी हो गई। धनवान वैश्यों के सम्बन्ध में तो कोई विशेष अड़चन नहीं थी, उनके आवास के लिए भूमि राज्य की ओर से उपलब्ध करा दी गई। सम्पन्न लोग उस पर अपना भवन बनाकर बस गये तथा उद्योग-व्यवसाय में लग गये, परन्तु निर्धनों की समस्या विकट थी, वे स्वयं विपन्न और असहाय थे, उनके आवास और व्यवसाय का प्रबन्ध आवश्यक था, ऐसा न करने पर राज्य में अव्यवस्था व अराजकता फैलने का डर था।

सहृदय महाराज ऐसे लोगों के राज्य में प्रवेश पर **शेष पृष्ठ २० पर...**

अग्रसेन तो ज्योति किरण है मानवता की मूरत है
उनकी वाणी अजर अमर है आज की जरूरत है
महाराजा अग्रसेन जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं

Bishnu Bajoria
Mob. : 94340 08745
73 Veer Savarkar Sarani, Bankura,
West Bengal, Bharat - 722101

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पुरे अग्रवंश को आपने हमेशा इक पावन सूत्र में है बाँधा
जय हो महाराज अग्रसेन का जैकारा अग्रोहा से आपने दूर किया अँधियारा
हार्दिक शुभकामनायें

Kishori Lal Agarwal
Mob. : 9434046934
Kurseong Carriers Pvt. Ltd.
Nehru Road, Khalpara, Po. Siliguri,
Dist. Darjeeling, West Bengal, Bharat 734005

कोई भी राजनीतिक कारण कितने ही प्रबल क्यों न हों, 'हिन्दी' भाषा के इस उत्थान में आड़े आने नहीं देना चाहिए - बिजय कुमार जैन

पृष्ठ १९ से ... प्रतिबन्ध भी नहीं लगाना चाहते थे पर दु:ख कातर थे महाराज अग्रसेन! वे ऐसे असहायों को शरण तथा आश्रय देना अपना प्रथम कर्त्तव्य एवं परम धर्म मानते थे, अत:लोग आते रहे। राज्य-कोष से उन्हें बसाने तथा धन्धे पर लगाने की व्यवस्था की जाती रही। यह क्रम चलता रहा, परन्तु कब तक? आने वालों की कोई सीमा नहीं थी। धीरे-धीरे राज्य-कोष कम होने लगा, राज्य की आर्थिक स्थिति क्षीण होने लगी।

मन्त्री-परिषद इस स्थिति से चिन्तित थी। राज्य-कोष निरन्तर घट रहा था। स्थिति यहाँ तक पहुँच गयी थी कि राज्य के आवश्यक कार्यों के लिए भी धन की कमी अनुभव होने लगी। आखिर मन्त्री- परिषद ने यह निर्णय ले ही लिया कि बाहरी लोगों को बसाने के लिए राज्य-कोष से अब और व्यय नहीं किया जा सकेगा, महाराज को इस निर्णय से बड़ा दु:ख हुआ।

असहाय लोगों को सहायता न मिलने से उनका कोमल हृदय व्यथित रहने लगा। राज्यकोष की भी स्थिति दयनीय थी, वे उस पर बलात् और अधिक भार डाल भी नहीं सकते थे, वे उदास तथा चिन्तित रहने लगे।

महाराजा सदा इसी विकट समस्या का समाधान ढूँढने में लगे रहते और रात-दिन वे इसी पर विचार करते रहते थे। विद्वानों-मनीषियों से सलाह मशवरा करते, परन्तु कोई हल नहीं निकल रहा था। व्यथा और चिन्ता से उनका स्वास्थ्य गिरने लगा। एक दिन दु:खी मन से ही महाराज, नगर की स्थिति देखने के लिए निकल पड़े। घूमते-घूमते वे उधर भी गये जिधर बाहर से आये गरीब वैश्यों का शिविर लगा हुआ था, उनका कष्ट देख महाराज का हृदय द्रवित हो उठा। वे रो पड़े उसी समय उन्होंने देखा कि एक परिवार के सदस्य भोजन करने बैठे ही थे कि उनके यहाँ पर अतिथि आ गया।

घर में और भोजन नहीं था पर अतिथि को भूखा नहीं रखा जा सकता था। समस्या खड़ी हो गई, परन्तु परिवार वालों ने इसका हल सहज ही निकाल लिया, सभी सदस्यों ने अपने-अपने भोजन में से थोड़ा-थोड़ा निकाल कर अतिथि के लिये भोजन की व्यवस्था कर दी। अतिथि की भरपेट सेवा हो गई और परिवार का कोई सदस्य भी भूखा नहीं रहा। महाराज के मस्तिष्क में सहसा बिजली कौंध गई। अंधेरा छँट गया, जगमग प्रकाश से मन द्युतिमान हो उठा, उन्हें अपनी समस्या का हल मिल गया, वे बड़े प्रसन्नचित हो अपने महल में लौट आये, दूसरे दिन उन्होंने मन्त्री-परिषद तथा नगर के गण्यमान्य महाजनों की बैठक बुलाई, उसमें उन्होंने अपने विचार रखे, उन्होंने प्रस्ताव रखा- ''अग्रोहा के प्रत्येक घर से-बाहर से, आने वाले प्रत्येक परिवार को 'एक रूपया और एक ईंट' का उपहार दिया जाना चाहिए, इससे हमारे नागरिकों पर कोई विशेष भार नहीं पड़ेगा और बाहर से आने वाला परिवार इस सहायता से सम्पन्न हो जाएगा, इस प्रकार हमारे राज्य में बाहर से आने वालों की समस्या हल हो जाएगी। राज्य में अराजकता भी नहीं फैलेगी। असमानता, ऊँच-नीच तथा छोटे-बड़े के विघटनकारी विचार नहीं पनप सकेंगे। भाईचारा बढ़ेगा तथा समाज और देश, सदा एकता के मजबूत सूत्र में बन्धे रहेंगे।

महाराज का प्रस्ताव तथा छोटा सा भाषण, मन्त्री-परिषद व सम्भ्रान्त नागरिकों ने सुना, उन्हें अपने महाराज के विचारों पर गर्व हुआ। समस्या का इतना सरल समाधान पाकर वे सभी हर्षित हो गये।

महाराज का प्रस्ताव सभी ने सर्व-सम्मति से यथारूप में स्वीकार कर लिया। नागरिकों ने कहा- ''महाराज, वैसे भी हम नित्य ही अपने इन गरीब भाइयों को कुछ न कुछ तो देते ही हैं परन्तु वह उनके लिए ठोस सहायता नहीं होती है, इससे उनका मनोबल तो गिरता ही है, उनमें हीन-भावना भी जागृत होती है, आपके प्रस्ताव से हम अपने इन गरीब भाइयों की स्थाई सहायता करने में सफल हो सकेंगे, इस ठोस मदद से वे भी अपने पाँवों पर आप खड़े हो सकेंगे और हमेशा के लिये वे किसी पर आश्रित नहीं रहेंगे, उनमें नए आत्मविश्वास की जागृति होगी और वे भी हमारी ही तरह साधन-सम्पन्न होकर नए उद्योग-व्यवसाय में लगेंगे तो राज्यकोष में भी वृद्धि करेंगे, इस प्रकार हमारा स्वदेश भी समृद्ध तथा सम्पन्न हो जाएगा, महाराज! हम आपके इस अनुपम सुझाव के बड़े आभारी हैं, हम इसी समय से इस सुझाव को कार्य में परिणत करने में जुट जाते हैं'' निर्णय हो गया।

समस्या के सहज समाधान ने सबको प्रसन्न कर दिया, खुशी-खुशी सभी लोग कार्य में जुट गये। राज्य की ओर से उचित आवासीय भूमि की व्यवस्था कर दी गई, नागरिकों ने आये हुए, प्रत्येक परिवार को प्रत्येक घर से 'एक-एक रूपया तथा एक-एक ईंट' इकट्ठे करके दे दिए, सभी विस्थापितों का पुनर्वास हो गया, वे भी सभी सम्पन्न हो गये, अपने निजी व्यवसाय में जुट गये और महाराज अग्रसेनजी की प्रशस्ति के गीत गाने लगे, इसके बाद से अग्रोहा में यह परम्परा चल पड़ी। बाहर से आकर बसने वाले किसी भी परिवार को प्रत्येक घर से 'एक रूपया व एक ईंट' का उपहार मिलता तो अग्रोहा में आते ही कंगाल भी अमीर बन जाता और वह उम्र-भर अग्रोहा तथा अग्रसेन के गुण गाता था।

विश्व में समाजवाद का पहला पाठ पढ़ाने वाले अग्रसेन महाराज अग्रवालों के आदिपुरूष माने जाते हैं, उनके नाम से आज भी प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ला प्रथमा को श्री अग्रसेन-जयन्ती, देश-भर में बड़ी धूम-धाम से मनाई जाती है। महाराजा अग्रसेन जयन्ति पर्व पर 'मैं भारत हूँ' के प्रबुद्ध पाठकों व समस्त अग्र बंधुओं को मेरी तरफ से कोटि-कोटि शुभकामनायें।

-बिजय कुमार जैन 'हिंदी सेवी'

अग्रसेन जी के जीवन की शिक्षा हम अपनायें
उनके आदर्शों पर चलकर जीवन सुखी बनाएँ
महाराजा अग्रसेन की जन्म जयंती पर

हार्दिक शुभकामनाएं

Rajendra Prasad Mody

Mody Foundation

Mody Building, 27, R.N. Mukherjee Road,
Kolkata, West Bengal,Bharat-700001
Ph.: 033 2248 0682
e-mail: rpm@heilindia.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

आसुरी शक्तियों पर विजय के लिए की जाती हैं 'दुर्गापूजा'

आसोज सुदी एकम से आसोज सुदी नवमी तक देवी की पूजा नौ दिन तक की जाती है, इसीलिये उसे 'नवरात्र' या 'महापूजा' कहा जाता है, इसमें पूजा करना मुख्य कार्य है जबकि उपवास, एकासना (एक वक्त भोजन) नव व्रत आदि तो पूजा के अंग मात्र हैं, इसमें अपने-अपने कुल के आधार पर ही नवरात्री के नियमों की अनुपालना करनी चाहिये, किसी के घर में पूजा-पाठ नहीं हो सकती तो कहीं और पूजा-पाठ करना अनिवार्य होता है, कुछ लोग तो केवल व्रत ही करते हैं जबकि वे पूजा-पाठ और हवन नहीं करवाते, वे अपने-अपने कुल-धर्म के अनुसार इस व्रतोत्सव का अनुष्ठान कर सकते हैं।

सामान्यतः नवरात्रि का शुभारम्भ 'एकम' तिथि से होता है किन्तु जब कभी एकम टूट जाती है अथवा कभी तिथि बढ़ जाती है तब क्या करना चाहिए, इसकी जानकारी करनी भी आवश्यक है? नियम तो यह है कि प्रतिपदा के दिन तिथि 6 घड़ी, 4 घड़ी, 2 घड़ी रहे तो उसे ही प्रतिपदा मान ली जाती है। अमावस्या के दिन यदि प्रतिपदा आ जाये तो भी अमावस्यायुक्त प्रतिपदा का यह अनुष्ठान नहीं करना, यदि प्रतिपदा के दिन तिथि दो घड़ी से कम हो बिल्कुल नहीं हो, तभी उसे अमावस मान लिया जाता है। देवीपुराण की कथा से युक्त प्रतिपदा को चंडिका का पूजन न करें। 'प्रतिपदसत्वे अमायुक्ताऽपिग्राहया' अर्थात् यदि एकम क्षय हो और प्रतिपदा न हो तो अमावस्या में भी स्थापना की जा सकती है।

नवरात्र के प्रारम्भ का उल्लेख शास्त्रग्रंथों में भी हुआ है जिसे 'आद्यपादौ परित्यज्य, प्रारभेत, नवरात्रकम्' पंक्ति से प्रमाणित किया जा सकता है, इसका यह अभिप्राय है कि पहले 10 घड़ी छोड़कर यह व्रत आरम्भ किया जाये, यदि चित्रा वैधृत योग हो तो उसके अन्त में आरम्भ करें यदि उस दिन चित्रा-वैधृत पूरे हो तो तिथि के चौथे हिस्से से पूजा करनी चाहिए, इस पूजा के अधिकारी सभी वर्ग के लोग समान रुप से माने गये हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, मलेच्छ यहाँ किसी भी श्रेणी का व्यक्ति इसका अधिकारी हो सकता है। पूजा-पाठ करने का अधिकार पृष्ठ २२ से...

NANDAN GROUP OF INDUSTRIES

TMT Bars / Cut & Bend TMT Bars

Fabricated / Galvanized Structure & TLT Tower / OHE...

Billets / Blooms / Narrow Slabs

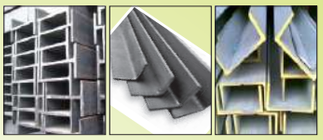
Re-Rolled Steel Structure

Thermal & Solar Power

Wire Rod

Sponge Iron

APPROVED VENDOR :
CORE, POWERGRID, BHEL, RAILWAYS, PGVCL, MPPKVVCL,CSPDCL,BSPDCL, GETCO,CSPTCL.
CONVERSION AGENT :
JINDAL STEEL & POWER LTD.

HI-TECH POWER & STEEL LIMITED
Works : Village - Parsada, Post - Sarora, Tehsil - Tilda, Dist - Raipur (C.G.) 493114
Regd. Office : 199-'C', First Floor, Main Road, Samta Colony, Raipur (C.G.) 492001
Contact : 0771-4078010-31, E-mail : mhil_ryp@hotmail.com

NANDAN STEELS & POWER LIMITED
Works: Village: Sondra, Siltara Industrial Area, Dist.: Raipur (C.G.)
Regd office: 199-"C", Ground Floor, Main Road, Samta Colony, Raipur (C.G.)
Contact : 0771-4078000-19, E-mail : office@nandansteels.com

ISO 9001 ISO 14001 IS : 2830 CM/L-2552251 IS : 2831 CM/L-2551855 IS : 1786 CM/L-5900003812
ISO 9001 ISO 14001 IS : 2830 CM/L-8979927 IS : 2062 CM/L-8822789

यदि बढ़ाना है देश को विकास की ओर, तो दें हिंदी भाषा पर जोर-बिजय कुमार जैन

पृष्ठ २१ से ... तो सब को प्राप्त है किन्तु शुद्र और म्लेच्छ लोगों को होम करने का अधिकार नहीं है।

प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त नव पाठ अवश्य करने चाहिए, यदि कार्य में बाधा हो तो तृतीया से नवमी तक 7 पाठ अथवा पंचमी से नवमी तक 5 पाठ अथवा सप्तमी से नवमी पर्यन्त तीन पाठ अथवा अष्टमी को एक पाठ या नवमी को एक पाठ करें। नवरात्र में चाहे एक ही पाठ क्यों न हो, वह अवश्य करना ही चाहिये, उसमें अखण्ड दीपक रखें या पाठान्त कर उसे प्रज्जवलित करें, यह साधक की इच्छा और क्षमता पर निर्भर है।

दूर्गापूजा

प्रातःकाल, दोपहरी, या तीसरे प्रहर के बाद कलश-स्थापन करें, प्रातः जल्दी उठें। उबटन (मालिश) कर आंवला से स्नान करें, फिर पवित्र वस्त्र पहन कर संकल्प करें- 'मैं देवी की प्रीति पाने के लिये, सारी विपत्तियों का निवारण करने के लिये, धनपुत्रादि की वृद्धि के लिये, जय तथा कीर्ति की उपलब्धि के लिए प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त नवरात्र पूजा, गणपति पूजा, स्वस्तिवाचन के द्वारा चण्डी की आराधना करें' फिर लाल कपड़ा बिछावें और उस पर अष्टदल बनाकर कलश स्थापन करें, तदुपरांत गणपति पूजन तथा स्वस्तिवाचन का कर्मानुष्ठान किया जाये।

कलश-स्थापना के समय, 'महिद्यो' मंत्र बोलते हुए जमीन पर हाथ रखें। 'औषधयः' मंत्र से जव डालें, उसमें गंगाजल मिलावें और गन्ध द्वारा उसकी सुगन्ध बढ़ावें या 'औषधीयः' मंत्र से कूट, छाल, छबील, हल्दी, वच, चमेली, नागरमोथा तथा दगड़फूल भी डालें। 'कण्डात्' मंत्र से दूब डालें। 'अश्वत्थेयौ' मंत्र से पीपल, बड़, गूलर, आम कणेर के पत्ते मिलावें। 'स्योना प्र' मंत्र से उसमें गजशाला, घुड़साल, राजद्वार, रथशाला, चौराहा, गौशाला तथा तालाब की मिट्टी डालें। ''याफलिनी'' मंत्र से सुपारी, 'साहित्नानि' मंत्र से पंचरत्न (सोना, चांदी, पन्ना, नीलम, हीरा) डालें। 'युवा सुवासाः' मंत्र से लाल वस्त्र लपेटें, 'पूर्णादर्वि' मंत्र से पूर्णपात्र तथा वरुण देव का आवाहन करें।

जवारा लगाना

पवित्र मृत्तिका (मिट्टी) का पात्र, तालाब की मिट्टी, गौबर, जव और पूजा की सामग्री तैयार कर जवारे लगाना चाहिए। मिट्टी के पात्र में मिट्टी साफ करके 'महिद्यौ' मंत्र से मिट्टी डालकर 'गावश्चिद्' मंत्र से उसमें गोबर डालना, 'औषध्य' मंत्र से जव मिलाना और 'वरुणो' मंत्र से जल सींचना चाहिए, फिर 'वाटिकास्वरुपायै नमः' मंत्र से आवाहन-ध्यान पूजन करें, फिर नमस्कार करके पाठ में बैठने वाले ब्राह्मण को 'नमोस्वनन्ताय' मंत्र द्वारा तिलक-पुष्प-अक्षत-चढ़ावें। 'व्रतेन दीक्षा' मंत्र से वरणी बाँधे, सुपारी और दक्षिणा देवें और फिर पाठ करें।

पाठ के प्रकार

ब्राह्मण का वरण करने के बाद आसन पर बैठकर यह संकल्प करें-यजमानेन वृताऽहं चण्डीपाठं, नारायणहृदयं, लक्ष्मीहृदयं पाठं वा करिष्ये।' तप्तश्चात् सप्तशती का पाठ करना चाहिये अन्यथा 'नारायण हृदय' तथा लक्ष्मी हृदय का भी पाठ कर सकते हैं, पाटे पर पुस्तक रखें, नारायण को नमस्कार करें।

नारायणं नमस्कृत्यं नरंचैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासें ततो जयमुदीरयेत्॥

हिन्दी अनुवाद - नारायण को नमस्कार करने के पश्चात् नरों और नरों में श्रेष्ठ भगवान श्री कृष्ण, देवी महर्षि व्यास को प्रणाम कर 'जय महाकाव्य' का पाठ करना चाहिए,

फिर नियमानुसार अथवा शाक्त पुस्तक पूजा करें। 'ॐ ऐं, हीं क्रीं चामुण्डायै विच्चै नमः' इस मंत्र के द्वारा गन्धपुष्पादि चढ़ावें और फिर पाठ करें।

पाठ के नियम - प्रत्येक मंत्र के आदि और अंत में (ॐ) का उच्चारण अवश्य करें और हाथ में पुस्तक नहीं पकड़ें, लिखित पुस्तक ब्राह्मण के द्वारा लिखी गई ही काम में लेवें। अध्याय की समाप्ति पर ही रुकें, बीच में नहीं रुकें, अगर विराम हो जाये तो अध्याय वापिस पढ़ें, ग्रन्थ के अर्थ को समझाते हुए, साफ-साफ उच्चारण करें तथा न तो जोर से और न धीरे से पढ़ें, उपसर्ग की शांति के लिए 3 पाठ करें।

अग्र क्रान्ति लाना है सारे विश्व में तुम्हें छा जाना है
महाराजा अग्रसेन की जन्म जयंती पर हार्दिक शुभकामनायें

Mahabir Prasad Jalan
Ramkrishna Forgings Ltd.
23 Circus Avenue, 9th Floor
Kolkata, West Bengal, Bharat-700017
Ph : 033-71220900
Secretary.cmd@ramkrishnaforgings.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

अग्रसेन जयंती पर विशेष

अग्र समाज का मिशन २१

मिशन २१ या कम व्यंजन, जैसा नाम में ही निहित है, इस ग्रुप का एकमात्र उद्देश्य शादी या अन्य समारोह में २१ या कम व्यंजन बनवाने की प्रेरणा देना है, विदित हो कि पिछले कुछ सालों से शादी के कार्यक्रम में वैभव प्रदर्शन की होड़ शुरू हुई है उसके दुष्प्रभाव के रूप में स्वास्थ्य धन एवम् अन्न की बर्बादी हो रही है, किसी भी तरह से नष्ट न होने वाले डिस्पोजल का अनियंत्रित उपयोग इस खर्चीली व्यवस्था में होता ही है जो पर्यावरण एवम् स्वास्थ्य को नुकसान कर रहा है और प्रधानमंत्रीजी के स्वच्छता अभियान के विरूद्ध भी है।

विगत सालों में इस अभियान को समाज के प्रत्येक वर्ग से समर्थन मिला है, कई लोगों ने अपने यहाँ होने वाले समारोह में २१ या कम खाद्य व्यंजन रखने का संकल्प लिया एवम् कई ने अपने समारोह में क्रियान्वयन करके समाज में अनुकरणीय उदाहरण भी प्रस्तुत किया, वाकई इस तरह के समारोह में ज्यादा आनंद और आतिथ्य महसूस किया गया, क्योंकि व्यवस्था समिति होने से परिवारजनों ने स्वयं भोजन व्यवस्था संभाली।

मिशन २१ का उद्देश्य अन्न और बर्बादी को रोकना है :

शादी में तो हम व्यवस्थापक से अनुरोध करते हैं कि भोजन सीमित मात्रा में बनायें और उससे जो धन बचे उसे या तो अपनी बेटी या बहु के लिए सुरक्षित करें, थोड़ी मदद जरूरतमंद इंसान की भी करें।

ये तो शादी या समारोह की बात है और खास तौर पर उच्चवर्गीय लोगों को इसमें आगे आने की बात है क्योंकि उन्हें ही मुख्य तौर से इसमें उदाहरण प्रस्तुत करके लोगों के लिए प्रेरणा बनना पड़ेगा ताकि मध्यमवर्गीय इसे अपनाने में छोटापन महसूस ना करें, पर एक आम इंसान के तौर पर हम ये वादा तो कर ही सकते हैं कभी झूठा नहीं छोड़ेंगे, घर-बाहर या रेस्टोरेंट हर जगह, उतना ही लेंगे जितना हम खा सकें, ये भी अपने आप में बड़ी तादाद में अन्न और धन की बचत होगी।

मिशन २१ ने अपने विषय पर केंद्रीत रहकर छोटे से **शेष पृष्ठ २४ पर...**

With Best Compliments

Sri Pradip Kumar Todi

LUX®

LUX INDUSTRIES LIMITED

Office : PS Srijan Tech Park, DN-52 10th Floor,
Sector-V, Salt Lake City Kolkata, West Bengal, Bharat - 700091
Ph: 033 - 4951-5151

पृष्ठ २३ से... अभियान से शुरू हुई २१ से कम आइटम वाले विषय के लाखों प्रशंसक तैयार कर दिए हैं, आजकल सभी कार्यक्रम में समाज वाले खाद्य व्यंजन ज्यादा होने पर चिंतन करते हैं, यह मिशन २१ की सफलता की आहट, जिसे हमें जबरदस्त विस्फोट में परिवर्तित करना है, तो तैयार हैं न आप, मिशन २१ ने पिछले कुछ वर्षों में अग्रवाल समाज ही नहीं वरन् पुरे मारवाड़ी तथा वैश्य वर्ग को यह सोचने पर विवश कर दिया कि हम क्यों और किसलिए बेशकीमती अन्न और हमारी मेहनत की कमाई को शादी ब्याह या अन्य कार्यक्रमों में झूठी शान दिखाने के लिए बर्बाद करने में संकोच नहीं करते।

'अग्रसेन जयंती' के शुभ अवसर पर हम यह संकल्प लें कि हमें मिशन २१ को पुरे विश्व में फैलाना है ताकि इस मिशन के माध्यम से अन्न संरक्षण जैसे विश्वव्यापी आन्दोलन में इसको परिवर्तित कर सकें और पूरा विश्व अग्रवाल समाज की सोच को स्वीकार करे।

२१ या कम व्यंजन रखने की उपयोगिता

१. अन्न एवम् भोजन (प्रसादी) की बर्बादी, इस तरह के आयोजनों में आवश्यकता से काफी अधिक सामग्री का निर्माण किया जाता है।

२. शादी का बजट कई गुना बढ़ जाता है जिसके कारण मध्यम वर्गीय परिवार की अर्थ व्यवस्था बिगड़ जाती है। उच्च वर्ग भी कम खर्च कर सादगी की मिसाल पेश कर सकता है, अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए बचा हुआ पैसा जरूरतमन्द परिवार के कल्याण में खर्च किया जा सकता है।

३. ज्यादा स्टाल होने एवम् स्वाद के लालच की वजह से कई बार आवश्यकता से अधिक भोजन ले लिया जाता है, जो कि मोटापा बढ़ाता है। मिर्च मसाले, तेल मक्खन, घी एवम् शक्कर का आवश्यकता से अधिक प्रयोग, गंभीर रोगों को आमन्त्रित करना है।

४. आजकल पार्टियों में भोजन शुरू होने से पहले स्टार्टर एवम् मॉकलेट का प्रयोग मूर्खता पूर्ण परंपरा है, यह परम्परा पहले सिर्फ अल्कोहल या ड्रिंक करते समय किया जाता था, परंतु पिछले कुछ सालों में यह इतना विकराल रूप धारण ले चुका है कि कई लोग अपना पेट सिर्फ स्टार्टर से ही भरते हैं, खाना खाने के समय भूख खत्म हो चुकी होती है और बड़ी संख्या में खाना व्यर्थ हो जाता है।

५. विशेषकर बच्चे रोटी सब्जी की तरफ रूख ही नहीं करते, बच्चों को पोषण के लिए तत्वपूर्ण आहार नहीं मिल पाते, अतः उनके शरीर की न सिर्फ रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है बल्कि वो घर पर भी सिर्फ स्नैक्स या चाइनीज की डिमांड करते हैं।

बाँध पगड़ी सर पर अपने जब होते महाराजा अग्रसेन तैयार
होकर स्वर घोड़े पर जब चलते चारों और होती उनकी जय-जयकार

Shankarlal Agarwal
भ्रमणध्वनि : 09832150448

RITESH TRADEFIN LTD.
Manufacturers of
RTF Brand Structural Steel

Kanji Lal Avenue, Durgapur,
West Bengal, Bharat- 713210
दूरध्वनि : 0343-2553518
अणुडाक: mbispat_rtf@rediffmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

शक्ति की आराधना का पर्व

भूमिका : भारतवर्ष में मनाए जाने वाले त्योहारों में नवरात्रा एक प्रमुख त्योहार है, यह वर्ष में दो बार होता है, पहला नवरात्रा चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष में एकम् से नवमी तक तथा दूसरा नवरात्रा आसोज महीने के शुक्ल पक्ष में एकम (प्रतिपदा) से नवमी तक होते हैं, इन दोनों नवरात्रियों में दुर्गा तथा कन्या की पूजा की जाती है।

पूजन विधि : प्रतिपदा के दिन एक पट्टे पर देवी दुर्गा तथा गणेशजी की स्थापना की जाती है। नौ दिनों तक दीपक चावल रोली इत्यादि से देवी दुर्गा का पूजन होता है, जौ लगाया जाता है। नौ दिनों तक प्रतिदिन आरती की जाती है। दुर्गा का पाठ कर कुंवारी कन्या को भोजन भी कराया जाता है।

अष्टमी के दिन देवी दुर्गा की कड़ाही होती है, जिसमें सीरा पूरी बनाया जाता है, उस दिन नौ कुँवारी कन्याओं को भोजन कराके, उन्हें सामर्थ्यानुसार दक्षिणा व कपड़ा दिया जाता है। अष्टमी तथा नवमी महातिथि मानी जाती है, कई लोग इस दिन रामायण भी पढ़ते हैं तथा हवन भी करते हैं।

कथा : जनश्रुतियों में इस त्योहार के पीछे यह कथा प्रचलित है कि एक बार देवताओं और राक्षसों में सौ वर्षों तक युद्ध चलता रहा। अं देवताओं के राजा इंद्र थे और राक्षसों के महिषासुर, इस युद्ध में अंततः देवता परास्त हो गए, पराजित देवगण भगवान शंकर तथा विष्णु के पास गए और अपनी आपबीती सुनाई, शंकर तथा विष्णु को असुरों पर बड़ा क्रोध आया। वहाँ विभिन्न देवताओं के शरीर से भारी तेज प्रकट हुआ जिसने एक नारी का रुप धारण कर लिया, देवताओं ने उस नारी की पूजा की तथा उसे अपने आभूषण व अस्त्रादि समर्पित किए, इस देवी के अट्टाहास से पूरी पृथ्वी कांप उठी। महिषासुर अपने सैन्य बल समेत देवी का सामना करने के लिए गया, किन्तु देवी के हाथों मृत्यु का ग्रास बन गया, इस देवी ने शुंभ और निशुंभ नामक दो दैत्यों का भी वध किया। इस देवी के महान ओजस और पराक्रम से प्रभावित होकर देवतागण भी उसकी स्तुति करने लगे, यही देवी दुर्गा है, जिसके पूजन का त्योहार हम-सब मिलकर नवरात्रा के रुप में मनाते हैं।

हिंदी भाषा के प्रहरी महात्मा गांधी आज भी समकालिक

मानव इतिहास के इस अत्यंत भयावह क्षण में इंसान की आखिरी आशा महात्मा गांधी की अहिंसा का सिद्धांत है। गांधी के सिद्धांतों के अनुसार, परम अनुभूति में सहनशीलता, समझदारी, शांति एवं सद्भावना तथा आत्मा के अपने प्रारब्ध को पाने हेतु सभी संभावित पथों की पहचान आवश्यक है।

''पूरा विश्व मेरा देश है
सभी मानव मेरे भाई-बहन हैं
और अच्छे कर्म करना ही मेरा धर्म है''

मोहनदास करमचंद गांधी, जिन्हें लोकप्रिय नाम 'महात्मा' से जाना जाता है, हमारे लिए वो नाम है जिसने सर्वाधिक शक्तिशाली अस्त्रों-अहिंसा एवं सत्य का प्रयोग करते हुए हमें स्वतंत्रता दिलाई। वर्तमान परिदृश्य में यदि हम देखें तो हम यह केवल एक व्यक्ति का नाम नहीं है परन्तु आज जब पूरा विश्व क्रोध एवं बैचेनी से बेहाल है एवं विभिन्न देशों के बीच शत्रुता बढ़ती जा रही है, यह नाम जीवन की एक आवश्यक विद्या बन चुका है। महात्मा गांधी अद्भुत ऐक्य, सत्य एवं मानवीयता के एक प्रतीक बनकर उभरते हैं। अहिंसा, शांति, शांतचित्त गांधी के विचारों में प्रमुख हैं। कई साल बीत गए लेकिन गांधी के दर्शन की चमक आज भी ज्यों की त्यों है, ये विचार किसी एक धर्म, जाति, संप्रदाय, भाषा के लिए नहीं, केवल भारत के लिए नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व के लिए भी है। भारत में कई बाहरी ताकतों ने घुसपैठ करने की कोशिश की पर गांधी के आदर्श अविनाशी बने रहे। गांधी का दर्शन महज भारत के पुनर्जन्म हेतु नहीं परन्तु संपूर्ण मानव जाति के पुनर्शिक्षण हेतु आवश्यक है, अब यह पूर्णतया स्पष्ट हो चुका है कि मानव

इतिहास के इस अत्यंत भयावह क्षण में इंसान की आखिरी आशा महात्मा गांधी की अहिंसा का सिद्धांत ही है। गांधी के सिद्धांतों के अनुसार, परम अनुभूति में सहनशीलता, समझदारी, शांति एवं सद्भावना तथा आत्मा के अपने प्रारब्ध को पाने हेतु सभी संभावित पथों की पहचान आवश्यक है। गांधी जी का नजरिया जो कि मुख्यतया चेतना के विकास से संबंधित है, हमारे वक्त में खास महत्व रखता है। यह भौतिकवादी सभ्यता की अप्रासंगिकता को चिन्हित करता है।

असल में, गांधी ने गणितीय एवं वैज्ञानिक ज्ञान की नींव रखी, इन्होंने समस एवं स्थान दोनों को मापा। गांधी सिद्धांत को स्पष्टता से देखते थे एवं उसके महत्व को और भी ज्यादा गहराई से समझते थे। आत्मानुशासन, आत्मसंयम एवं आत्मविकास जैसा गुण, जो कि गांधी संस्कृति का मुख्य **शेष पृष्ठ २६ पर...**

अग्र क्रान्ति लाना है
सारे विश्व में तुम्हें छा जाना है
महाराजा अग्रसेन जी की जन्म जयंती पर हार्दिक शुभकामनायें

Ramesh Kumar Saraogi

Saraogi Udyog Pvt. Ltd.

Merchants & Importer for Coal and Coke

● Corp. Office at Merline Infinite ●
DN-51 in Block DN at Sector V,
Salt Lake Electronic Complex, No. 910 at 9th Floor,
Kolkata, Wset Bengal, Bharat-700091

● Regd.office ●
21, Hemanta Basu Sarani, "Centre Point" Suite No – 212,
2nd Floor, Kolkata, Wset Bengal, Bharat – 700 001
Fax : +91-33-2243-5334, +91-33-22138782
Phone : +91-33-2248-1333/0674, +91-33-2213-8779/80/81

E-mail : info@saraogiudyog.com | www.saraogiudyog.com

यदि मुझे विश्वास हो जाये कि 'हिन्दी' राष्ट्रीय एकता में बाधक है, तो मैं 'हिन्दी' को सदा के लिए राष्ट्रभाषा पद से हटा लेने का प्रस्ताव करूँगा - सेठ गोविन्ददास

पृष्ठ २५ से... भाग है, वे आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने कई साल पहले थे। अतएव, हम सभी को गांधी (अहिंसा) धर्म को बचाने की कोशिश करनी चाहिए। वास्तव में, महात्मा गांधी एक महान आत्मा थे जिन्होंने सभी धर्मों की आवश्यक एकता एवं पूरी मानवता के मूल ऐक्य का उपदेश दिया। हाल के समय में, एकता को गहरी एवं आंतरिक ताकतों ने कमजोर करने की पुरजोर कोशिश की है ताकि हमें अस्थिर किया जा सके। सदियों से मानव शांति स्थापित करने के लिए कार्य कर रहे हैं फिर भी जीत से ज्यादा हमारे हाथ हार ही लगी क्योंकि शांति का अर्थ स्थूल हिंसा का अभाव नहीं है। कोई भी देश यह नहीं कह सकता कि वह शांत है क्योंकि वह किसी के साथ युद्ध रत नहीं है। मानव स्वभाव ने हिंसा करने के कई तरीके ढूंढ निकाले हैं-स्थूल भी एवं सूक्ष्म भी। यह सूक्ष्म हिंसा है (मानसिक-शाब्दिक हिंसा) जो कि ज्यादा खतरनाक है क्योंकि हम जाने-अनजाने में ये हिंसा कर जाते हैं ओर यह पीड़ित के अंदर क्रोध जगाता है और अंततः वह स्थूल हिंसा (शारीरिक हिंसा) के रुप में प्रकट होती है।

गांधी जी का ताबीज था-''तुम्हें एक जंतर देता हूँ, जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ: जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा, क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा, क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मारंग अतृप्त है, तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।''

हिंसा की संस्कृति पूरे विश्व में संबंधों के ह्रास के रुप में परिणत हुई है। आज हर कोई स्वार्थी और आत्म केन्द्रित है, यदि हमारे बीच परस्पर आदर, समझ एवं बेहतरी पर आधारित रिश्ते नहीं होंगे तो कोई सामंजस्य नहीं होगा, तो वहां शांति भी नहीं होगी। गांधीजी ने कहा था

''शांति तुमसे शुरु होती है''

तो उनके कहने का अर्थ स्वयं तक सीमित उस शांति से नहीं था जो कि हम साधना अथवा ज्ञान द्वारा प्राप्त करते हैं अथवा उसकी खोज करते हैं बल्कि यह वह शांति है जिसे हमें सभी जीवों के प्रति प्रेम एवं आदर से बाहर लाना है, भले ही उनका आर्थिक, सामाजिक या राजनैतिक स्तर कोई-सा भी हो। भारत एक अत्यंत धार्मिक समाज है और पूर्णतया धर्मनिरपेक्ष भी। गांधीजी भी अत्यंत धार्मिक थे, परन्तु उन्हें साफ-साफ पता था कि राज्य को धर्मनिरपेक्ष ही होना चाहिए, वह व्यक्तियों के धार्मिक ख्यालों एवं राज्य के अपने नागरिकों के प्रति कर्तव्यों के बीच अधिकाधिक संभव दूरी के हिमायती थे, उन्होंने यह भी साफ तौर पर कहा कि धर्मनिरपेक्षता का अर्थ धर्म का विरोध नहीं है, यह भी कहा कि राज्य को किसी धर्म से स्वयं को न जोड़ते हुए सभी धर्मों का आदर करना चाहिए, आज मैं जानती हूं कि हममें से कितने लोग सच्चे अर्थों में गांधी का अनुसरण करते हैं, हममें से कितने गांधी के सच्चे अनुयायी हैं?

'मैं भारत हूँ' के प्रबुद्ध पाठक महात्मा गांधी द्वारा दिखाए गए पथ पर चलने को तैयार हैं? हम आश्वस्त हैं कि यदि हमने गांधीवाद का अनुसरण किया तो हम अवश्य उस शांति को पाएंगे जिसकी हमें अभिलाषा है।

दूसरों का हित जिनके हृदय में बसता
जग में कुछ मुशकिल नहीं होता
सबको मिले सुख और शांति अपार
ऐसे हमारे महाराजा अग्रसेन का प्यार

हार्दिक शुभकामनायें

RAJENDRA PRASAD AGRAWAL
Mob. : 9434048627

NIRMAL BAKERY PRIVATE LIMITED

101, H.C.ROAD,
POST-KURSEONG, DIST.-DARJEELING,
WEST BENGAL, BHARAT 734101

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

महाराजा श्री अग्रसेन की आरती

(स्तुति)

जय अग्रसेन दाता, स्वामी अग्रसेन दाता
जिस पर कृपा तुम्हारी, सब वैभव पाता
जय अग्रसेन दाता...
महालक्ष्मी के परम हो प्यारे, सबके मन भाता
सत्य संग व्रत लिन्हा, आनंद के दाता
जय अग्रसेन दाता...
सूर्यवंश में जन्म लियों है, जन-जन सुख दाता
वल्लभसेन के पुत्र लाड़ले, भगवती है माता
जय अग्रसेन दाता...
अटल सिंहासन सोहे, सब जन हरषाता
प्रिया माधवी संग में, परमानंद है पाता
जय अग्रसेन दाता...
आग्रेयपुरी की करी स्थापना, विश्व में विख्याता
अग्रवंश के हैं संस्थापक, कष्ट हरो हे दाता
जय अग्रसेन दाता...
अमित प्रभाव तुम्हारो, सब जग विख्याता
सबके कष्ट मिटाओ, शरण में जो है आता
जय अग्रसेन दाता...

कृपया मुझे INDIA ना बोलें क्योंकि

मैं भारत हूँ

भारत दुनिया की पांचवीं अर्थ व्यवस्था बन गया है

सुरेश गोंडालिया
उद्योगपति व समाजसेवी
जूनागढ़ निवासी-सूरत प्रवासी

सुरेश जी का जन्म सौराष्ट्र जूनागढ़ में और प्रारंभिक शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। १९८० से आप सूरत में बसे हुए हैं। वर्तमान में आप सूरत में टेक्सटाइल, फार्मास्यूटिकल, होम डेकोर व कंस्ट्रक्शन व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सतत सक्रिय रहते हैं। ट्रू चॅरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से समाज सेवा व पर्यावरण सेवा में अग्रणीय भूमिका निभा रहे हैं। सूरत शहर रियल इस्टेट में त्रायोम रीऐलिटी के तीन प्राजेक्ट्स आ रहे है। त्रायोम पैलेस (वेसु) और अभवा के पास दो प्राजेक्ट्स त्रायोम कासा और त्रायोम अबोड। यह प्रीमियम प्राजेक्ट्स प्रकृति और आध्यात्म को संजोते हुए हर छोटी मोटी ज़रूरत पूरी करती है।

हर प्राजेक्ट्स में 3,4,5 BHK , Pentahouse के साथ 20000 से 25000 sqft एरीया में सब नई अमेनिटीज़ यहा पर उपलब्ध होगी

भारत को केवल भारत ही बोला जाए इंडिया नहीं इस पर आपके विचार?

प्राचीनकाल से भारतभूमि के अलग-अलग नाम रहे हैं मसलन जम्बूद्वीप, भारतखण्ड, हिमवर्ष, अजनाभवर्ष, भारतवर्ष, आर्यावर्त, हिन्द, हिन्दुस्तान और इंडिया। 'भारत' की वैविध्यपूर्ण संस्कृति की तरह ही अलग-अलग कालखण्डों में इसके अलग-अलग नाम भी मिलते हैं, इन नामों में कभी भूगोल उभर कर आता है तो कभी जातीय चेतना और कभी संस्कार, दुष्यन्त पुत्र भरत एक चक्रवर्ती सम्राट यानी चारों दिशाओं की भूमि का अधिग्रहण कर विशाल साम्राज्य का निर्माण कर अश्वमेध यज्ञ किया, जिसके चलते उनके राज्य को भारतवर्ष नाम मिला और भारत को इंडिया कहे जाने के पीछे प्राचिन सिंधु घाटी सभ्यता और सिंधु नदी आधार रहे हैं, इस नदी को संस्कृत में सिंधु और अंग्रेजी में इंडस कहा जाता है, इसी इंडस शब्द से इंडिया शब्द बना है।

भारतीय संविधान में भी इस बात का उल्लेख पहले पेज पर ही है कि भारत को इंडिया एवं भारत कहा जाएगा, संविधान के अनुसार भारत एक संघ है और इसे इन दोनों नामों से पुकारा जाना चाहिए संविधान के अनुसार।

विश्व में आज भारत की आर्थिक स्थिति के बारे में आपका क्या कहना है?

पहले हमें एक विकासशील या पिछड़े देश के रूप में देखा जाता है. लेकिन अब भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है, हमने देखा है कि भारत ने पिछले दस सालों में जो क़दम उठाए हैं उनका असर दिखा है। भारत का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ा है। अरब से अधिक जनसंख्या वाला देश 'भारत' विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। पिछले दशक में 'भारत' विश्व की अर्थव्यवस्था से जुड़ा है और साथ ही उसका आर्थिक विकास भी हुआ है। 'भारत' अब एक विश्व खिलाड़ी के रूप में भी उभरा है।

गुजरात में मोदी सरकार की उपलब्धियां व मोदी जी के प्रधानमंत्री कार्यकाल के ८ वर्ष की उपलब्धियों के बारे में आपके विचार?

मोदी के शासनकाल में विकास किसी एक सेक्टर में नहीं बल्कि कई अन्य सेक्टर्स में हुआ है, जिसे संतुलित विकास का नाम दिया गया। सर्विस सेक्टर, मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर या फिर कृषि आधारित विकास के शानदार आंकड़ों ने संतुलित विकास में भरपूर योगदान दिया। साल २००० से लेकर २०१२ तक राज्य में ३ हजार रूरल रोड प्रोजेक्ट्स पूरा किया गया था, वहीं २००४-०५ से २०१३-१४ के बीच बिजली प्रत्येक इंसान की खपत के लिए ४१ फीसदी ज्यादा उपलब्ध थी।

इन्वेस्टर्स को लुभाने का सफल प्रयास

मोदी जी ने साल २००३ में वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल इन्वेस्टर्स सम्मेलन का आयोजन कर पूरी दुनिया का ध्यान खींचा। वाइब्रेंट गुजरात के जरिए नरेन्द्र मोदी जी 'ब्रांड गुजरात' बनाने में सफल साबित हुए। साल २००३ में ७६ एमओयू के जरिए ६६ हजार से बढ़कर साल २०११ में ८,३८० एमओयू में परिवर्तित हुआ।

फूड डेफिसिएट राज्य से गुजरात बना फूड सरप्लस राज्य

बिजली, सड़क और पानी जैसी समस्याओं से छुटकारा

समाज के विकास के लिए महिलाओं के उत्थान पर दिया गया जोर,

बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कन्या केलवणी योजना सहित शाला प्रवेशोत्सव अभियान चलाया, जिसमें अधिकारियों और मंत्रियों को गांवों तक भेजकर ज़मीन पर उतारने का सफल प्रयास किया गया, ऐसे ही अन्य प्रकल्पों के माध्यम से देश की स्थिति सुधारने का प्रयास किया गया है।

-मैं भारत हूँ

TRIYOM REALTY
Divine by Nature

कोई भी राजनीतिक कारण कितने ही प्रबल क्यों न हों, 'हिन्दी' भाषा के इस उत्थान में आड़े आने नहीं देना चाहिए - बिजय कुमार जैन

हरिष भांदिर्गे
नगरसेवक
मनपा वार्ड क्रमांक १६४ कुर्ला, मुंबई
भ्रमणध्वनि: ९८९२८२१२९३

हरीश जी प्रधानमंत्री मोदी जी को जन्मदिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि भारत के चौमुखी विकास में माननीय प्रधानमंत्री जी ने कई अहम भूमिकाएं निभाई हैं, उन्होंने जो भी योजनाएं लाई उसका लाभ सीधा जरूरतमंद को मिले इस तरह के कई प्रकल्प किए हैं। आज 'भारत' की साधारण जनता से लेकर हर आयु वर्ग के लोग उनके द्वारा लाई गई विभिन्न योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं, चाहे वह महिला वर्ग हो, किसान वर्ग हो या व्यापारी वर्ग, सभी के लिए उन्होंने कार्य किया है और इस कार्य को उन्होंने अंतोदय तक पहुंचाया है। भारत के आर्थिक विकास में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है, चाहे वह कौशल विकास के माध्यम से हो या असंगठित मजदूरों के हक के लिए हो या लघु उद्योग या अन्य बड़े उद्योगों के लिए हो, सभी के माध्यम से उन्होंने देश की आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने ना सिर्फ देश की आंतरिक स्थिति को मजबूत किया है बल्कि बाहरी स्थिति को भी मजबूत किया है। विदेश नीति के माध्यम से विदेशों में भी और पड़ोसी देशों में भी अपनी स्थिति मजबूत की है। कोरोना काल के दौरान वैक्सीन का निर्माण करवा कर 'भारत' को तो सुरक्षित किया ही है, साथ ही पड़ोसी देशों में भी वैक्सीन पहुंचा कर अपना पड़ोसी धर्म निभाया है। ऐसे ही अन्य कई माध्यम से उन्होंने देश की आर्थिक स्थिति को विश्व स्तर पर पहुंचाया है, उनके जन्म दिवस पर कोटि कोटि शुभकामनाएं...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' इस विषय पर अपना पूर्ण समर्थन देते हुए कहते हैं कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम होना चाहिए 'भारत', क्योंकि वेद पुराणों या किसी भी ग्रंथों में आप उठाकर देख लीजिए अपने देश को भारतवर्ष के नाम से ही जाना जाता रहा है, अतः यही हमारा ऐतिहासिक नाम है जिसकी हमें आवश्यकता है।

हरीश जी मूलतः महाराष्ट्र के सातारा के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा मुंबई में संपन्न हुई है। यहां आप छात्र संघ से ही बीजेपी से जुड़े हैं। भाजपा युवा मोर्चा के भी सदस्य रहे है, विभिन्न पदों पर कार्यरत रहते हुए २०१२ व २०१७ में नगर सेवक के रूप में चुने गए, साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

प्रवीण शाह
नगरसेवक वार्ड क्रमांक १५ भाजपा,
बोरीवली, मुंबई
भ्रमणध्वनि: ९३२२७०४८२९

प्रवीण जी प्रधानमंत्री मोदी जी को जन्मदिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि प्रधानमंत्री मोदी जी ने अपने ८ सालों के कार्यकाल में कई उपलब्धियां प्राप्त की है जो सर्वविदित है। उन्होंने न सिर्फ आर्थिक दृष्टिकोण से बल्कि सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी अपने 'भारत' को उत्तम स्थान प्रदान किया है, आज यदि हम पाकिस्तान और चीन से टक्कर ले सकते हैं तो वह मोदी जी के कारण ही संभव हुआ है। उन्होंने 'भारत' के सर्वांगीण विकास के लिए कई योजनाएं बनाई जिसमें किसानों, महिलाओं, भारतीय कन्या को मजबूत बनाने के लिए कई प्रकल्प लाए, जिसका लाभ आज हर कोई उठा रहा है। देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने के लिए नोटबंदी, जीएसटी जैसी कई योजनाओं को लागू किया, साथ ही कई ज्वलंत समस्याओं का भी उन्होंने निवारण किया, जो उनके कार्यकाल की सबसे बड़ी उपलब्धि है। आज विदेशों में भी हमारे देश की एक विशेष पहचान बनी है और यह सब मोदी जी के कारण ही संभव हुआ है, ऐसी ही अन्य कई उपलब्धियां प्राप्त की है मोदी जी ने, उनके जन्मदिवस पर कोटि-कोटि शुभकामनाएं...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि यह बहुत ही अच्छा अभियान है, इसका मैं पुर्ण समर्थन करता हूँ।

६८ वर्षीय प्रवीण जी मूलतः गुजरात के मेहसाणा के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा मुंबई में ही संपन्न हुई है। मात्र १३ वर्ष की आयु से ही आप आरएसएस से जुड़े हैं और १९६८ में जनसंघ व बाद में भाजपा के भी सदस्य रहे। वर्तमान में बोरीवली मुंबई वार्ड क्रमांक १५ के नगरसेवक के रूप में सेवारत है, आप जैन समाज की भी विभिन्न संस्थाओं से जुड़े हैं, जिसमें आप अध्यक्ष और ट्रस्टी के रूप में सेवारत हैं। जय भारत!

महादेव शिगवन
नगरसेवक
मनपा वार्ड क्रमांक १५४ चेंबूर, मुंबई
भ्रमणध्वनि: ९८२०१८७४९६

महादेव जी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को जन्मदिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि यदि मोदी जी को आज के समय का युग पुरुष कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। पिछले ७० सालों में जो 'भारत' ने हासिल नहीं किया वही भारत आज समृद्ध संपन्न दृष्टि से देखा जाता है और इसका श्रेय मोदी जी को ही जाता है। उन्होंने निचले स्तर से स्वच्छता के लिए शुरुआत की, जिसको आज भारत का बच्चा-बच्चा अपना आ रहा है। कोरोना जैसी महामारी के समय भी उन्होंने देश का उत्तम नेतृत्व कर 'भारत' में ही वैक्सीन का निर्माण कर नई उपलब्धि प्राप्त की और वैक्सीन को घर-घर तक पहुंचाया, जो अपने आप में ही एक बड़ी उपलब्धि रही, साथ ही उन्होंने इस वैक्सीन का लाभ पड़ोसी देशों को भी पहुंचाया, उनके दिशा निर्देशन में देश की आर्थिक स्थिति मजबूत बनी हुई है, ऐसे युगपुरुष का मार्गदर्शन हमें प्राप्त होता रहे यही कामना है, उनको जन्म दिवस **शेष पृष्ठ २९ पर...**

पृष्ठ २८ से... की कोटि कोटि शुभकामनाएं...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं कि अपने देश का भी एक ही नाम हो भारत क्योंकि भारत में ही सनातन, संस्कृति व इतिहास छुपा हुआ है अतः हमारी पहचान भारत से है और भारत ही रहनी चाहिए इसका मैं पूर्ण समर्थन करता हूं।

महादेव जी मूलतः रत्नागिरी के निवासी हैं। आपका जन्म रत्नागिरी में व संपूर्ण शिक्षा मुंबई के चेंबूर में संपन्न हुई है। यहां आप विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं। बाल्यकाल से ही आरएसएस से जुड़े भाजपा में वार्ड अध्यक्ष, विधानसभा क्षेत्र अध्यक्ष जैसे कई पदों पर कार्य किया। कुनबी समाजोन्नती संघ, युवा चेंबूर प्रतिष्ठान नामक एनजीओ से जुड़े हैं। वर्तमान में स्थानिय जनता द्वारा नगर सेवक के रूप में चुने गए हैं और कार्यरत हैं। जय भारत!

हरीश छेड़ा
वार्ड क्र. ८ नगरसेवक भाजपा,
बोरीवली, मुंबई
भ्रमणध्वनि: ९८६९०११२३६

हरीश जी प्रधानमंत्री मोदी जी को जन्मदिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि मोदी जी ने प्रधानमंत्री कार्यकाल के ८ वर्ष पूर्ण किए हैं, इन ८ वर्षों में 'भारत' ने सभी क्षेत्रों में अतुलनीय विकास किया है, इसके हम सभी प्रत्यक्षदर्शी हैं, उन्होंने 'भारत' की प्रतिभा को विश्व में बढ़ाया है। पहले विदेशों में हमारे 'भारत' को कोई पूछता नहीं था पर मोदी जी ने अपनी ऐसी प्रतिभा दिखाई कि आज उनका स्वागत रेड कारपेट पर किया जाता है, जो की एक सम्मान का विषय है। मोदी जी ने अपने नीतियों के माध्यम से विदेशी संबंधों में काफी सुधार किया है। उन्होंने स्वयं के प्रधानमंत्री शपथ ग्रहण समारोह में सभी पड़ोसी देशों के मुखिया को बुलाया उन्होंने पड़ोसी देशों से अपने संबंध अच्छे करने के प्रयास किए। कोविड-१९ के दौरान उन्होंने ऐसा नेतृत्व किया कि अन्य देशों की तुलना में हमारे देश में कोविड-१९ से होने वाली मृत्यु दर काफी कम रही। उन्होंने 'भारत' की अर्थव्यवस्था को विश्व में पांचवें स्थान पर लाकर रखा, जो हमारे 'भारत' की सबसे बड़ी उपलब्धि रही।

वे एकमात्र ऐसे नेता हैं जिन्होंने लोकसभा में स्पष्ट बहुमत हासिल किया, उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान देश की बड़ी समस्या जैसे राम मंदिर, कश्मीर आर्टिकल ३७० जैसे ज्वलंत समस्याओं का भी समाधान किया। उन्होंने अलग-थलग पड़े कश्मीर को देश में शामिल कर एक देश एक कानून लाया। उनके द्वारा दिए गए सभी दिशा निर्देश हमेशा ही देश हित में रहे, यह किसी से छुपा नहीं है, उनके जन्मदिन पर कोटि-कोटि बधाइयां...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि यह बहुत ही अच्छा अभियान है, इसका मैं पूर्ण समर्थन करता हूं और मेरा प्रयास रहेगा कि आगे अपने कार्यकाल में इसका सुझाव अन्य के सम्मुख प्रस्तुत करुं।

हरीश जी मूलतः गुजरात के कच्छ के निवासी हैं। आपका जन्म मध्य प्रदेश के जबलपुर के पास करेली में व स्कूली शिक्षा यहीं से संपन्न हुई है। तत्पश्चात उच्च शिक्षा इंजीनियरिंग आपने रायपुर से प्राप्त की। पिछले २५ वर्षों से आप समाज सेवा और राजनीति से जुड़े हैं। आप बाल्यकाल से ही आर.एस.एस. के विचारों से प्रेरित रहे, तत्पश्चात संघ के संघचालक के रूप में भी सेवारत रहे हैं। लोगों की सेवा ही आपका ध्येय रहा। २०१७ में आपने सर्वप्रथम नगरसेवक का चुनाव लड़ा और भारी मतों से विजय प्राप्त की, नगर सेवक के रूप में आप बोरीवली वार्ड क्रमांक ८ के नागरिकों के लिए सेवारत हैं, आपको कई बार २२७ नगर सेवकों में सर्वोच्च नगरसेवक का सम्मान भी प्राप्त हुआ है। जय भारत!

प्रशांत अग्रवाल
अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान
उदयपुर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९९२८७४४४४४

प्रशांत जी महाराजा 'अग्रसेन जयंती' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि महाराजा अग्रसेन जी ने ही सर्वप्रथम समाजवादी विचारधारा को प्रेरित किया, इसके लिए उन्होंने अपने साम्राज्य में 'एक ईंट-एक रुपया' का संदेश दिया, जिसका अर्थ है कि छोटे-छोटे सहयोग के माध्यम से हम समाज के जरूरतमंदों की सहायता कर सकें, भले ही पुष्पम पत्रम् का सहयोग क्यों ना हो पर समाज को सहयोग अवश्य प्रदान करें, आज संपूर्ण अग्रवाल समाज इस सिद्धांत को किसी न किसी रूप में अवश्य अपनाए हुए है।

आज का युवा वर्ग बहुत ही प्रैक्टिकल है वह धर्म से ऊपर उठकर समाज देखता है, वह समझता है कि अच्छा क्या है, बुरा क्या है उनका दृष्टिकोण स्पष्ट है, वह भले ही मंदिर में ना जाए पर जरूरतमंदों की सहायतार्थ बिना स्वार्थ के तत्पर रहता है, वह मानता है कि नर में ही नारायण है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, क्योंकि 'भारत' में जो भाव छुपे हैं वह इंडिया नाम में नहीं, भारत सतत्व है। हिंदी भाषा सबसे प्रिय भाषा है और 'भारत' नाम हिंदी को संबोधित करता है अतः अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, मैं इस अभियान से पूर्ण सहमत हूं।

प्रशांत जी मूलतः उदयपुर के भिंडर के निवासी हैं। आपका जन्म अजमेर व संपूर्ण शिक्षा उदयपुर में संपन्न हुई। आप आर्थोपेडिक सॉफ्ट गुड्स मैन्युफैक्चर के कारोबार से जुड़े हुए हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर सहभागी होते हैं। नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष पद पर हैं जिसके माध्यम से दिव्यांगों को चिकित्सा, रोजगार व अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराते हैं। जय भारत!

यदि बढ़ाना है देश को विकास की ओर, तो दें हिंदी भाषा पर जोर-बिजय कुमार जैन

उत्तम प्रकाश अग्रवाल
अध्यक्ष-ऑल इंडिया चार्टर्ड अकाउंटेंट
माउंट आबू निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३२२२७००६९

उत्तम प्रकाश जी अग्रवाल समाज के अग्रदूत महाराजा अग्रसेन जी को नमन करते हुए कहते हैं कि महाराजा अग्रसेन जी ने संपूर्ण समाज में एकजुटता, समानता व एकरूपता का संदेश व सिद्धांत दिया है, जिसे आज संपूर्ण अग्रवाल समाज अपना रहा है और इस दिशा में अन्य समाज की तुलना में अग्रवाल समाज सबसे अग्रणीय है। विश्व भर में फैले अग्रवाल समाज द्वारा धर्मशाला, विद्यालय, कॉलेज, धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि कार्य किए जाते हैं जिसमें सबसे अधिक संख्या अग्रवालों की होती है। समाज सेवा के लिए तो अग्रवाल समाज हमेशा ही अग्रणीय रहता है जो नारा प्रधानमंत्री मोदी जी ने दिया है 'सबका साथ-सबका विकास' इसका आरंभ तो महाराजा अग्रसेन जी ने अपने साम्राज्य काल में ही कर दिया था, वे बिना युद्ध के ही शासक कहलाए। महाराजा अग्रसेन जी के चरणों में मेरा कोटि-कोटि वंदन...आज अग्रवाल परिवार के बच्चे भी धर्म-कर्म में अपना पूर्णत: योगदान देते हैं। विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों में उनका उत्साह देखते ही बनता है, साथ ही वे धार्मिक कार्यों में भी बढ़-चढ़ सहभागी होते हैं। 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर अपना समर्थन व्यक्त करते हुए कहते हैं कि बिल्कुल अपना देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, यही हमारे देश की वास्तविक पहचान है।

उत्तम प्रकाश जी मूलतः राजस्थान के माउंट आबू के निवासी हैं, आपका जन्म पाली सुमेरपुर नामक स्थान पर हुआ, संपूर्ण शिक्षा माउंट आबू में संपन्न हुई। माउंट आबू में आपने तिरुपति बालाजी का मंदिर बनाया हुआ है और सबसे प्रमुख यूपीएसीए गुरुकुल नामक शैक्षणिक संस्था का निर्माण किया जो लगभग २५ एकड़ में फैला है, यहां गौशाला व प्याऊ भी बनी हुई है। राजस्थानी सेवा संघ कांदिवली मुंबई के अध्यक्ष हैं, साथ ही ऑल इंडिया चार्टर्ड अकाउंटेंट के भी अध्यक्ष हैं, जो आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि है इसके साथ ही आपको पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा ताई पाटिल के हाथों प्रोफेशनल एक्सीलेंस के लिए भी सम्मानित किया गया है। जय भारत!

विकास बंसल
अध्यक्ष, उद्योग व्यापार मंडल गाजियाबाद महानगर
गाजियाबाद निवासी
भ्रमणध्वनि: ९६५४३६७२८२

विकास जी 'महाराजा अग्रसेन जयंती' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि हम महाराजा अग्रसेन जी के ही वंशज हैं जिस पर हमें गर्व है। वे क्षत्रिय भी थे और वैश्य भी। उन्होंने समाज में संगठन और समानता लाने के लिए 'एक ईंट-एक रुपया' का सिद्धांत लाया। समाज में गरीब वर्ग की सहायता हो सके और वह इन सहयोग के माध्यम से अपना घर बनाए और व्यवसाय प्रारंभ कर सके। आज अग्रवाल समाज इन सिद्धांतों को अधिक से अधिक पालन कर रहा है। आज भारत ही नहीं विश्वस्तर पर देखिए तो सबसे ज्यादा गौशाला, धर्मशाला, भवन, भंडारे, अस्पताल, विद्यालय में अग्रवाल समाज का ही सबसे बड़ा योगदान है। कोरोना काल के दौरान भी सबसे अधिक दानदाताओं में अग्रवालों की संख्या बढ़-चढ़ कर रही, इस तरह आज अपना समाज संपूर्ण रूप से समृद्ध है और यह सब महाराजा अग्रसेन जी की कृपा दृष्टी से ही संभव हुआ है।

आज की युवा पीढ़ी भी अपने धर्म, सामाज और संस्कार से जुड़ी हुई है। अब पहले वाली बात नहीं रही उनमें भी अपने धर्म समाज और जाति के प्रति जागृति निर्माण हो रही है, वे भी विभिन्न धार्मिक सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर सहभागी होते हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' पर अपना विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, जिस तरह मोदी जी ने गुलामी के प्रतीक कई नामों को बदल चुके हैं, उसी तरह अपने देश का भी नाम इंडिया हटकर सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

विकास जी मूलतः उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले में स्थित दादरी के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। वर्तमान में गाजियाबाद शहर में बसे हुए हैं। यहां आप बुक डिस्ट्रीब्यूटर व्यवसाय से जुड़े हैं। खाटू श्याम मंडल के सदस्य, विश्व हिंदू परिषद के संगठन धर्म यात्रा महासंघ में महामंत्री, भारतीय उद्योग व्यापार मंडल गाजियाबाद महानगर के अध्यक्ष पद पर सेवारत है। अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

उमाशंकर अग्रवाल
व्यवस्थापक अग्रसेन सेवा समिति आगरा
आगरा निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४१०००२२०७

उमाशंकर जी 'अग्रसेन जयंती' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि महाराजा अग्रसेन जी ने समाज को संगठित व समृद्ध करने के लिए कई सिद्धांत प्रतिपादित किए जो आज भी अग्रवाल समाज द्वारा किसी न किसी रूप में अपनाए जा रहे हैं। उन्होंने समाज में कोई गरीब ना रहे व सभी समान रूप से व्यापार करें, इसके लिए 'एक ईंट-एक रुपए' का सिद्धांत लागू किया, उनके साम्राज्य में आने वाले सभी वर्ग अपना घर बना सकें और दूसरों की सहायता भी कर सकें, जिससे सभी का जीवन समान रूप से रहे, कोई गरीब नहीं रहे। आज पूरे विश्व में बने अग्रवाल समाज के भवन, अस्पताल, विद्यालय इसी सिद्धांत का प्रतिफल है। आगरा में स्थापित महाराजा अग्रसेन सेवा समिति द्वारा जरूरतमंदों को चिकित्सीय सुविधाएं उपलब्ध कराना, कम दरों पर औषधियां उपलब्ध कराना, आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों की स्कूल फीस जमा करवाना, ऑपरेशन के लिए **शेष पृष्ठ ३१ पर...**

पृष्ठ ३० से... आर्थिक सहायता प्रदान करना जैसे कार्य संपन्न करती है। महाराजा अग्रसेन जी की कृपा दृष्टि से संपूर्ण अग्रवाल समाज हर क्षेत्र में अग्रणीय है, महाराजा अग्रसेन जी के चरणों में कोटि-कोटि वंदन...

आज की युवा पीढ़ी भी सामाजिक धार्मिक क्षेत्र में बढ़-चढ़ कर सहभागी होती है उनका उत्साह देखते ही बनता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि बिल्कुल ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, हमारा देश सम्राट भरत की भूमि है, अतः इसका नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

उमाशंकर जी मूलतः आगरा के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। आप एयरफोर्स से निवृत होने के बाद भारतीय जीवन बीमा निगम से जुड़े और वर्तमान में पूरी तरह से समाज सेवा में सक्रिय हैं। आगरा स्थित महाराजा अग्रसेन सेवा समिति में व्यवस्थापक की जिम्मेदारी का निर्वाह कर रहे हैं। जय भारत!

विष्णु कुमार गर्ग

राष्ट्रीय मंत्री अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासभा

भिवानी हरियाणा निवासी-दिल्ली प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९८१११११२६५०

विष्णु कुमार जी 'अग्रसेन जयंती' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि महाराजा अग्रसेन जी अग्रवाल समाज के आराध्य हैं। वे अग्र समाज के संस्थापक कहे जाते हैं, उन्होंने समाज को एकजुट व समृद्ध करने के लिए कई सिद्धांत बनाए, जिसका निर्वाह आज भी अग्रवाल समाज कर रहा है, पर अग्रवाल समाज बिखरा हुआ है, आज देश ही नहीं विश्व में भी अग्रवाल समाज की संस्थाएं जिला तहसील प्रदेश वह राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत हैं पर सभी अपने-अपने क्षेत्रों में सक्रिय हैं, इनके द्वारा कई सामाजिक, धार्मिक संस्थाएं, विद्यालय, अस्पताल, धर्मशाला भवन आदि बनाए गए हैं, जो समाज सेवा के लिए अग्रसर हैं, पर संपूर्ण समाज में एकजुटता नहीं हो पा रही है, अतः सर्वप्रथम समाज में एकजुटता होनी अत्यंत आवश्यक है तभी हमारा समाज दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ेगा।

आज की युवा पीढ़ी अपने जीवन में इतना व्यस्त है कि उन्हें समाज और धर्म के लिए समय ही नहीं मिलता, इसलिए वह जुड़ नहीं पा रही है, युवाओं को समाज से जोड़ने के लिए विभिन्न संस्थाओं द्वारा कई प्रतियोगिताएं व अग्रसेन जयंती मनाई जाती है, जिससे युवाओं को भी अपने समाज अपने अस्तित्व की जानकारी रहे। अग्रवाल समाज की आर्थिक स्थिति की बात की जाये तो वह समृद्ध है पर एकजुटता के अभाव में वह राजनीति में सफल नहीं हो पा रहा है, अत: यदि हमें राजनीति में आना है तो समाज में एकजुटता होनी चाहिए तभी हम अपना अस्तित्व बना पाएंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए यही हमारे देश का मूल नाम है और यही हमारा गौरव है।

विष्णु जी मूलत: हरियाणा के भिवानी जिले के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा भिवानी में ही संपन्न हुयी है। पिछले ३५ वर्षों से आप दिल्ली में बसे हैं और व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्रों में भी सक्रिय हैं, धर्मार्थ औषधालय प्रबंधक कमिटी के प्रधान, अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासभा के राष्ट्रीय मंत्री पद पर सेवारत हैं। श्री रामलीला कमिटी शाहदरा दिल्ली, महाराजा श्री अग्रसेन सेवा समिति व महाराजा अग्रसेन चॅरिटेबल ट्रस्ट के महामंत्री व भारतीय अग्रवाल परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री पद पर सेवारत है। जय भारत!

ललित बेरीवाल

व्यवसाई व समाजसेवी

हरियाणा निवासी-कोलकाता प्रवासी

ललित जी 'अग्रसेन जयंती' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि महाराजा अग्रसेन जी अग्रवाल समाज के अग्रज हैं, उन्होंने संपूर्ण समाज को संगठित व समृद्ध करने के लिए कई सिद्धांत प्रतिपादित किए जिनमें से एक सिद्धांत है 'एक ईंट-एक रुपए' जिसके माध्यम से संपूर्ण समाज समृद्ध बन सके और एकजुट होकर कार्य करे। आज भी अग्रवाल समाज उनके सिद्धांतों का किसी न किसी रूप में अनुसरण कर समाज को अग्रसर करने के लिए प्रयत्नशील है, उनके द्वारा विभिन्न सामाजिक, धार्मिक संस्थाएं, स्कूल, विद्यालय भवन, धर्मशाला संचालित हैं, पर आज की युवा पीढ़ी महाराजा अग्रसेन जी के सिद्धांतों को भूलती जा रही है, अतः समाज का यह कर्तव्य बनता है कि उन सिद्धांतों व परंपराओं का अनुसरण कर उन धरोहर को संजोए रखें, उन्हें जीवित रखा जाए आने वाली पीढ़ी को भी उनके प्रति जागरूक कराएं।

आज अग्रवाल समाज आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में अग्रसर है। आज की जो पिढी है वह राजनीति, नौकरी व विभिन्न क्षेत्रों में आगे आ रहे हैं, वे आगे आएंगे तो ही हमारा समाज बढ़ेगा और साथ ही राष्ट्र का भी विकास होगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, हम अपने देश को भारत माता से संबोधित करते हैं, इंडिया से नहीं। तो हमारी प्राचीनतम पहचान भारत से ही है और 'भारत' ही रहनी चाहिए।

ललित जी मूलतः हरियाणा के निवासी हैं। आपका परिवार कई वर्षों से कोलकाता में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा कोलकाता में ही संपन्न हुई है। श्याम स्टील के नाम से स्टील उत्पादन से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। मर्चेंट चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के सीनियर उपाध्यक्ष हैं। कोलकाता साल्ट लेक सांस्कृतिक संगठन के विगत ४ वर्षों से अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं। साल्ट लेक शिक्षा सदन के उपाध्यक्ष पद पर सेवारत हैं, इस विद्यालय की शुरुआत आपके पिताजी ने की थी, वर्तमान में इस विद्यालय में ३००० बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। जय भारत!

हिंदी में मानवता है इसलिए हिंदी सर्वमान्य है-बिजय कुमार जैन

अशोक गोयल
प्रभारी श्री महालक्ष्मी रथ यात्रा सरगुजा जिला
अंबिकापुर निवासी
भ्रमणध्वनिः ९४२५५८५८२२

अशोक जी 'महाराजा अग्रसेन' जी की जयंती की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'महाराजा अग्रसेन' जी ने हीं सर्वप्रथम समाजवादी विचारधारा को लाया उन्होंने 'एक ईंट-एक रुपया' के माध्यम से समाज के कमजोर वर्ग को अपने समकक्ष लाने का प्रयास किया। आज भी अग्रवाल समाज इन सिद्धांतों को किसी न किसी रूप में अपना रहा है चाहे गरीब बच्चियों की शादी का प्रश्न हो या जरूरतमंदों की आर्थिक सहायता, हर क्षेत्र में अग्रवाल समाज के लोग आगे हैं और यह सब 'महाराजा अग्रसेन' के बताए मार्गों के कारण ही संभव हो सका है। आज अन्य समाज व देश के सम्मुख महाराजा अग्रसेन जी के विचारों व सिद्धांतों को अपनाया जा रहा है। छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा सामाजिक क्षेत्र में अग्रणीय भूमिका निभाने वाले सज्जनों को 'श्री अग्रसेन भगवान पुरस्कार' से सम्मानित किया जाता है और यह परंपरा २००३ से प्रारंभ हुई है, हमें गर्व है कि हम उनके वंशज हैं, उनके चरणों में मेरा कोटि -कोटि वंदन...

आज की युवा पीढ़ी में जागृति की आवश्यकता है और उनमें जागृति आ भी रही है अपने धर्म और समाज के प्रति ।

२६ सितंबर २०२२ को महाराजा अग्रसेन जी की जयंती के अवसर पर विभिन्न सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न किए जाएंगे, जिसमें युवाओं की भी भागीदारी बढ़-चढ़ कर रहेगी और इस माध्यम से युवाओं को भी अपने सामाजिक अस्तित्व की जानकारी होगी, साथ ही युवा वर्ग ही नहीं महिला वर्ग, किशोर वर्ग भी इसमें बढ़-चढ़ कर सहभागी होंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर अपना पूर्ण समर्थन देते हुए कहते हैं कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम होना चाहिए 'भारत', इंडिया नाम तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया है जो गुलामी का प्रतीक है, अतः अपनी पहचान भारतीय से ही होनी चाहिए।

अशोक जी मूलतः हरियाणा स्थित पथरवा गांव के निवासी हैं जो राजस्थान व हरियाणा की सीमा पर स्थित है। १९६२ से आपका परिवार अंबिकापुर छत्तीसगढ़ में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले १० सालों से आप रायपुर में बसे हैं और अनाज ट्रेडिंग के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं में भी बढ़-चढ़कर सहभागी होते हैं। भारत भ्रमण पर निकले श्री महालक्ष्मी रथयात्रा के सरगुजा जिले के प्रभारी रहे, वर्तमान में अग्रवाल समाज एंव विभिन्न सामाजिक संगठनो के कार्यकारिणी के सदस्य हैं। जय भारत!

प्रमोद कुमार अग्रवाल
राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय नारनौलिया अग्रवाल महासभा
नारनौल निवासी-रांची प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९३३४४४६६६०

प्रमोद जी 'महाराजा अग्रसेन की जयंती' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि महाराजा अग्रसेन जी ने ही प्रथम समाजवाद का सिद्धांत दिया है उन्होंने अपने साम्राज्य में सभी समान व सुखी समृद्धि रहे इसके लिए 'एक ईंट-एक रुपैया' का सिद्धांत दीया। जिसके माध्यम से राज्य में लोग सुख शांति से जीवन यापन करें और राज्य में आने वाले हर व्यक्ति को समान सम्मान मिले इसके लिए उन्होंने यह सिद्धांत लाया, जिसके माध्यम से वह अपना घर बना सके व जमा धनराशि से अपना व्यापार कर सके। साम्राज्य का हर व्यक्ति समान भाव से रहे वह सुख शांति स्थापित हो इसके लिए उन्होंने कई प्रयास भी किए हैं और आज संपूर्ण समाज किसी न किसी रूप में इन सिद्धांतों को अपनाए हुए हैं हमें गर्व है कि हम महाराजा अग्रसेन जी के वंशज हैं।

आज का युवा वर्ग में यह देखा गया है कि वह अपने समाज व संस्कारों से दूर होते जा रहे हैं मेरा उनसे यही अनुरोध है कि आप शिक्षा कहीं भी ग्रहण करें चाहे देश या विदेश में, पर अपनी संस्कृति व संस्कारों को संजोए रहे हैं और माता पिता से भी अनुरोध है कि वह बाल्यकाल से ही बच्चों को अपने समाज व संस्कारों से जोड़ें।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' इस विषय पर आपका कहना कि अवश्य अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही होना चाहिए। इसका मैं पूर्ण समर्थन करता हूं। प्रमोद जी मूलतः हरियाणा के नारनौल के निवासी हैं। आपका परिवार कई वर्षों से झारखंड के डाल्टनगंज में बसा हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले कुछ वर्षों से आप रांची में बसे हैं, आप यहां राइस मिल मैन्युफैक्चर व ट्रेडिंग के व्यवसाय से जुड़े हैं। साथ ही कई सामाजिक संस्था से भी जुड़े हुए हैं। अखिल भारतीय नारनोलिया अग्रवाल महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर सेवारत है, साथ ही माता हीरामणि निशुल्क कांवडिया सेवा संस्थान जो १९९८ से संचालित है में भी विशेष पद से जुड़े हुए हैं, देवी मंदिर के ट्रस्टी के रूप में भी कार्यरत हैं अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। कोरोना काल में लगातार झारखंड में ७५ दिनो तक समाज के साथ मिलकर गांव-गांव जा कर भोजन सामग्री का वितरण और दो सालो से डाल्टनगंज व रांची में हर शनिवार गरीब और जरूरतमंद लोगों के बीच खिचड़ी का वितरण किया जा रहा है, समाज के गरीब लड़के-लड़की की उचित पढ़ाई के लिए यथासंभव मदद की जाती है। जय भारत!

भारत को 'भारत' ही बोला जाना चाहिए

- बिजय कुमार जैन, वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक

हिंदी को जन साधारण की भाषा बनाना है, विदेशी भाषा से हनन को बचाना है-बिजय कुमार जैन

मनीष फिटकरीवाला

व्यवसाई

सिंघाना निवासी-तेलंगाना प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९२४६१०७५३४

मनीष जी 'महाराजा अग्रसेन जयंती' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि संपूर्ण समाज को सर्वप्रथम समाजवाद से अवगत कराने वाले महाराजा अग्रसेन जी ही थे, उन्होंने यह सिद्धांत समाज को संगठित व समृद्ध बनाने के लिए किया था, पर आज अग्रवाल समाज बिखरा हुआ है, इनमें संगठन की आवश्यकता है, अग्रवाल परिवार अपनी तरफ से भागीदारी भी निभाते रहे हैं, पर अग्रवालों की भागीदारी सामाजिक कार्य में पीछे होती जा रही है।

इसके लिए संपूर्ण अग्रवाल समाज को एक साथ मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है। जरूरतमंदों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाए, उनका रहन-सहन का स्तर सुधरे, इसके लिए भी प्रयास किया जाना चाहिए, तभी हम वास्तविक रूप से महाराजा अग्रसेन जी के वंशज कहलाएंगे।

आज की युवा पीढ़ी को हम चार भागों में बांटते हैं जो बहुत ही पैसे वाले हैं दूसरा जो अपने पारिवारिक व्यवसाय से जुड़े हैं, तीसरा मेहनतकश युवा, चौथा कम वेतन पर कार्य करने वाले युवा, सभी में सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता है तभी हमारा समाज आगे बढ़ेगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर अपना समर्थन देते हुए कहते हैं कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए साथ ही हम हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करें, हर सरकारी गैर सरकारी कामकाज हिंदी भाषा में किए जाएं तो अपने आप ही अपना देश 'भारत' के नाम से जाना जाएगा।

मनीष जी मूलतः राजस्थान स्थित 'सिंघाना' के निवासी हैं, जहां से आपका परिवार बिहार के जमालपुर में आकर बसा। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई, पिछले कई वर्षों से आप हैदराबाद तेलंगाना में बसे हुए हैं और स्वयं के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही यथासंभव सामाजिक कार्यों में भी अपनी भागीदारी निभाते हैं। छत्तीसगढ़ प्रांतीय मारवाड़ी युवा मंच के सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं। जय भारत!

अग्रसेन के वंशज हैं हम आगे ही बढ़ते जायेंगे
अग्रसेन की सेवा में हम सब मिलकर हाथ बटायेंगे

प्रदीप अग्रवाल
मो. ९०६४६५७९५८

M/S Hiralal Agarwal & Sons
मीरा बाजार, पलाशी, नदिया, पश्चिम बंगाल, भारत- 741156

अग्र क्रान्ति लाना है सारे विश्व में तुम्हें छा जाना है
महाराजा अग्रसेन की जन्म जयंती पर
हार्दिक शुभकामनायें

KISHAN KUMAR KEJRIWAL
Mob. :9830045410

Kejriwal Electronics Limited

106, Narkeldanga Main Road, Kolkata,
West Bengal, Bharat - 700054
Phone : (033) 23629057
Email : oscar@cal.vsnl.net.in

JC-21, Salt Lake City, Kolkata,
West Bengal, Bharat - 700106
Phone : (033) 23355637

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

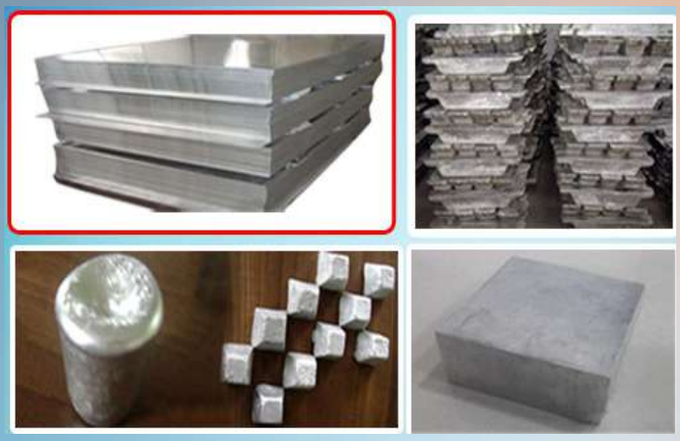

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

जन-जन के सरताज
महाराजा अग्रसेन जयंती पर
समस्त 'मेरा राजस्थान'
के प्रबुद्ध पाठकों को
हार्दिक शुभकामनाएं

Bhaniram Sureka
Mob. : 9331113332

Roadwings International Pvt. Ltd.

8, Camac Street, 12th Floor, Kolkata,
West Bengal, Bharat -700017
Phone : (033) 24793332
Email : bhaniramsureka@gmail.com

31, Judges Court road, 9F Rajshree Appartment,
Kolkata, West Bengal, Bharat -700027
Ph. : (033) 22825784/5849/40603332

With Best Compliments

Deora Family

FATEHPUR, KOLKATA & MUMBAI

अग्रसेन जी के जीवन की शिक्षा हम अपनायें
उनके आदर्शों पर चलकर जीवन सुखी बनाएँ
महाराजा अग्रसेन जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं

MAHABIR PRASAD AGARWAL
Mob. : 9831812666

SHYAM METALICS & ENERGY LTD

7th Floor, Trinity Towers, 83, Topsia Road,
Kolkata, West Bengal, Bharat-700046
Ph. : (033) 40111000
e-mail : chairman@shyamgroup.com

Shrikunj, 14B, Alipore Park Road,
Kolkata, West Bengal, Bharat-700027
Phone :(033) 24799186/40111031

कोई भी राजनीतिक कारण कितने ही प्रबल क्यों न हों, 'हिन्दी' भाषा के इस उत्थान में आड़े आने नहीं देना चाहिए - बिजय कुमार जैन

जल्दबाजी में लाया गया जीएसटी: डॉ. शशि पांजा

आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान मंत्री डॉ. शशि पांजा, एमसीसीआई के प्रेसिडेंट ऋषभ कोठारी, वाइस प्रेसिडेंट ललीत बेरीवाल व नमित बाजोरिया ने कहा कि उद्योग के मामले में बाकी राज्यों से बेहतर है प. बंगाल

कोलकाता: केंद्र सरकार द्वारा लागू किये गये जीएसटी को लेकर राज्य की उद्योग मंत्री डॉ. शशि पांजा ने कहा कि इसे लाने में जल्दबाजी की गयी। अगर सोच समझकर जीएसटी लागू किया गया होता तो उसमें इतने संशोधन नहीं करने पड़ते। डॉ. पांजा मर्चेंट चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रही थीं। मंत्री ने कहा कि जब से जीएसटी लागू किया गया है उसमें कई दफे संशोधन करने पड़े हैं।

पश्चिम बंगाल को लेकर मंत्री ने कहा कि केंद्र राज्य का न तो बकाया दे रहा है, न ही केंद्र द्वारा प्रायोजित योजनाओं का फंड दिया जा रहा है। दूसरी तरफ बंगाल में उद्योग को लेकर मंत्री ने कहा कि बाकी राज्यों की तुलना में बंगाल काफी बेहतर है। यहां निवेश के अवसर हैं, जिसमें सरकार निवेशकों को पूरा सहयोग देती है।

सरकार की ओर से सिंगल विंडो सिस्टम की व्यवस्था की गयी है ताकि बाहर से आने वाले निवेशकों को कहीं कोई दिक्कत ना हो।

निवेशकों को संबोधित करते हुए मंत्री नें कहा कि एक विजन के साथ काम करने को आवश्यकता होती है। कहां क्या दिक्कत आ रही है इस बारे में सरकार को बताना होता है। राज्य सरकार की पूरी कोशिश रहती है कि वह हर संभव मदद करे। चेंबर के प्रेसिडेंट ऋषभ सी. कोठारी ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। धन्यवाद ज्ञापन ललित बेरीवाल ने किया। शशि पांजा ने कहा कि एक सरकार अगर तीसरी बार सत्ता में आयी है तो वह जनता का आशीर्वाद ही तो है।

देश की शान, हिंदी है महान-बिजय कुमार जैन

आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष पर इण्डिया से मुक्त भारत हो

आजादी के अमृत महोत्सव के बाद ही सही भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भारत को इण्डिया से सदा के लिए मुक्ति प्रदान कर दें, अब भारत को भारतीय चश्मे से देखना चाहिए।

१५ अगस्त २०२२ के स्वाधीनता दिवस पर लाल किले से देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का राष्ट्र के नाम राष्ट्रीय संबोधन से उम्मीद थी की आजादी के अमृत महोत्सव के पहले (७५ वर्षों) में जितनी भी सरकारें दिल्ली की सत्ता पर आसीन हुई, उनमें से कोई तो एक होगा जो भारत में सरकारी कामकाज के लिए एक राष्ट्रीय भाषा राष्ट्र को सौंप देगा, एक राष्ट्रभाषा हो जाएगी, संयुक्त राष्ट्रसंघ में 'भारत' की राजभाषा हिंदी को अधिकृत स्थान दिला दिया जाएगा। राज्यों का कामकाज राज्यों की अपनी-अपनी भाषाओं में हो जाएगा। गुलामी से मुक्त स्वाधीन देश में अपनी भाषाओं को अपनी पहचान के लिए पहला यह आवश्यक कदम उठाया जाना था, यह आशा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से इसलिये भी थी कि वे हिंदी भाषी नहीं हैं। गांधी जी के गुजरात के गुजराती भाषी हैं, अहिंदी भाषी हैं, पूरे देश में और दुनिया में, सभी जगह अपना सम्बोधन राजभाषा हिंदी में देते हैं। स्वाधीन भारत को गुलामी की निशानी 'इण्डिया' शब्द से मुक्ति प्रदान कर 'भारत' को भारतीयों को सौंप देंगे। १३० करोड़ लोग गर्व से कह सकेंगे कि वे भारत के हैं, भारतीय हैं और उनमें भारतीयता है।

इतिहास से लाभ उठाने के लिए, समृद्ध भारत बनाने के लिए, सोने की चिड़िया का युग अवतरण करने के लिए, किसी अन्य देश की ओर नहीं 'इण्डिया' नहीं केवल भारत की ओर दृष्टिपात करने की आवश्यकता है। 'भारत' नाम का अनुवाद 'इण्डिया' किसी भी भाषा में नहीं किया जा सकता, तब 'इण्डिया' नाम को प्रचलित करते-रहने का कोई उद्देश्य नहीं हो सकता, अमेरिका में 'रेड इण्डियन' है, तो उस शब्द का कोई अनुवाद नहीं किया जा सकता, अमेरिका, जापान, ब्राजील, भूटान, अफ्रीका, नेपाल, आस्ट्रेलिया, इटली नाम एक ही हैं।

पड़ोसी देश श्रीलंका ने 'सिलोन' नाम बदल कर श्रीलंका रख दिया है, किसी भी देश के नाम का अनुवाद नहीं किया जा सकता, सभी भाषाओं में मूल नाम ही चलता है।

अंग्रेजों ने भारत पर ढाई सौ साल तक हमारे देश पर राज किया, अपनी सुविधा और भारत नाम जो कि हजारों साल से अपने इतिहास में उल्लेखित सांस्कृतिक गौरव और ऐतिहासिक शब्द 'भारत' को भूल जाएं, भूल जाएं कि कभी 'भारत' 'विश्व गुरु' था, भूल जाएं कि 'भारत' कभी 'सोने की चिड़िया' था।

लम्बे समय तक अंग्रेजों का उपनिवेश बना रहे, 'इण्डिया' शब्द से गुलामी की याद बनी रहे। साम्राज्यवादी शासन की देन 'इण्डिया' शब्द है। इतिहासकार इयान जे. बैरो ने अपने लेख 'फ्रॉम हिंदुस्तान टू इण्डिया: नेमिंग चेंज इन चेजिंग नेम्स' में लिखा है-

'१८ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ब्रिटिश नक्शों में 'इण्डिया' शब्द का प्रयोग शुरु हुआ। 'इण्डिया' शब्द में ब्रिटिश गुलामी की गंध है, इस स्वार्थ पूर्ति के लिए 'इण्डिया' शब्द को सोची-समझी कुटिल चाल के वशीभूत प्रचलित कर दिया, उनकी इस **शेष पृष्ठ ३८ पर...**

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारतीय संस्कृति की ओर अवसर
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

अग्र क्रान्ति लाना है सारे विश्व में तुम्हें छा जाना है
महाराजा अग्रसेन की जन्म जयंती पर हार्दिक शुभकामनायें

Mukesh Kumar Goyal

ट्रस्टी	:	श्री अग्रसेन इंटरनेशनल हॉस्पिटल, रोहिणी
ट्रस्टी	:	महाराजा अग्रसेन हॉस्पिटल, पंजाबी बाग
ट्रस्टी	:	अग्रवाल सभा, विकास पुरी
ट्रस्टी	:	कामधेनु मंगल परिवार
ट्रस्टी	:	श्री मोरछड़ी (खाटु धाम) श्री श्यामा श्याम फाउंडेशन
वाइस चेयरमैन	:	शब्दशिला समाचार पत्र
मुख्य संयोजक	:	ऑल जोन टाइम्स, समाचार पत्र
मुख्य संरक्षक	:	वैश्य आभा पत्रिका
संरक्षक	:	स्वतंत्र दिशा पत्र
आजीवन सदस्य	:	वैश्य कॉलेज रोहतक
आजीवन सदस्य	:	पावन संसार
आजीवन सदस्य	:	वैश्य पैनोरमा पत्रिका
सदस्य	:	मायापुरी कावंड़ संघ
सदस्य	:	तारा नेत्रालय (संस्था), उदयपुर
सदस्य सलाहकार बोर्ड	:	अपनी दिल्ली

Shree Shyam Dharam Kanta
A Unit of Aggarwal Weigh Bridge Pvt. Ltd.
M-Block, Sec.-3, DSIIDC, Bawana, Delhi, Bharat- 110039

Shree Ram Dharam Kanta
A Unit of Paramhans Impex Pvt. Ltd.
A-Block, DSIIDC, Narela, Delhi, Bharat- 110040

R. D. Goyal & Sons
IRON METAL MERCHANT & GOVT. GENERAL ORDER SUPPLIER
D-3,17/5, Shamshan Ghat Road, Maya Puri,
Phase - II, New Delhi, Bharat- 110064
Mob : 9810414184, 9891414184, 8076332858

पृष्ठ ३७ से... रणनीति का शिकार होकर हम भारतीय गौरव के साथ 'व्ही आर इण्डियन' कहने लगे। स्वतंत्रता के बाद भी अंग्रेजों से प्रभावित हमारे ही लोगों ने 'इंडिया' शब्द को संविधान में बहुमत से शामिल करा दिया। 'इण्डिया देट इज भारत' संविधान का अभिन्न हिस्सा हो गया। 'भारत' के नाम के साथ 'इण्डिया' जुड़ गया। देश के दो नाम कर दिए गए। सरकारी कामकाज में 'भारत' और 'इण्डिया' दो शब्दों का इस्तेमाल चालु हो गया। 'भारतीयों' का नाम 'इण्डियन' प्रचलित कर दिया गया, यह तथ्य भी ओझल हो गया कि किसी देश के दो नाम नहीं हो सकते। भारतीय संस्कृति 'पूर्व' के स्थान पर 'पश्चिममय' कर दी गई है, आध्यात्मिक धरा की जीवन पद्धति को भौतिकता पर आधारित कर दिया गया।

'इण्डिया' के कारण भारत की कुण्डली भटक गई। भारत को अतीत की दिशा में ले जाना होगा। नयी पीढ़ी को अतीत का दर्शन कराना होगा। ज्ञान-विज्ञान, तंत्रज्ञान, कृषि विज्ञान का उद्भव भारत से ही हुआ है। 'इण्डिया' शब्द ग्रीक भाषा से आया है। ईसा से चौथी-पांचवीं सदी पूर्व ग्रीक लोगों ने सिंधु नदी के लिए 'इण्डस' शब्द का प्रयोग किया था। ग्रीक से यह शब्द दूसरी सदी में लैटिन में आया।

आदिपुराण (आचार्य श्री जिनसेन) में ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत ने षट्खण्डों को जीतकर चक्रवर्ती पद धारण किया, तब से 'भरत' के नाम पर देश का नाम 'भारतवर्ष' हो गया। आदिपुराण १५ में 'तन्नाना भारतं वर्षमितिहासीज्जनासपदम हिमाद्रेरासमुद्राच्च क्षेत्रं चक्रभृतामिदम्।।

अर्थात् जहां अनेक आर्य पुरुष रहते हैं, ऐसा यह हिमवान पर्वत से लेकर समुद्र पर्यंत का चक्रवर्तियों का क्षेत्र चक्रवर्ती भरत के नाम के कारण भारतवर्ष रूप से प्रसिद्ध हुआ। दो हजार वर्ष से भी अधिक पुरातन महाराज खारवेल के हाथी गुम्फाक शिलालेख (उड़िसा) में जो भारतीय इतिहास की धरोहर के रूप में संरक्षित में भी ऋषभदेव के पुत्र 'भरत' और 'भारतवर्ष' का वर्णन उल्लेखित है। वेदों के अनुसार 'भारत' सूर्य अर्थात् सूर्यवंशी है और 'भारती' उसकी शोभा है। वेदव्यास ऋग्वेद काल के भौगोलिक वर्णन में कई वैदिक समूहों अथवा जातियों में विभाजित, जिनमें गांधारी, अनुद्रुहा, पुरु, तुरुवश और भरत आदि थे। 'भरत और पुरु' दोनों महत्वपूर्ण जातियां थी।

पुराणों में भी ऋषभदेव के पुत्र भरत से ही इस देश का नाम भारत नामकरण माना है।

अग्निपुराण के अध्याय १० श्लोक १० से १२ में है:-

जरामृत्युभयं नास्तिक धर्माधर्मो युगादिकम्।
नाधर्म मद्यं तुल्या हिमाद्देशात्तु नामितः ।।
ऋषभो मरुदेव्यां च ऋषभाद् भरतोऽभवत्।
ऋषभभोउदात् श्री पुत्रे शाल्यग्रामे हरिं गतः ।
भरताद् भारतं वर्ष भरतात् सुमतिस्त्लभूत् । ।

मार्कण्डेय पुराण के अध्याय ५० श्लोक ३९ से ४२ में है:-

आग्नीध्रसूनोर्नाभिस्तु ऋषभोउभूत् सुतो द्विजः ।
ऋषभाद् बरतो जज्ञे वीरः पुत्र शताद्ववरः ।।
सोअभिषिंच्यवर्षभः पुत्रों महाप्राव्राज्यमास्थितः ।
हिमाह्वं दक्षिणं वर्ष भारतय पिता ददौ ।
तस्मातु भारतं वर्ष सत्य नाम्ना महात्मनाः ।।

श्रीमद् भागवत के खण्ड ५/६/३/ में है:-

येपांखलु बरतो ज्येष्ठः श्रेष्ठःगुण आसीद्येनेदं वर्ष भारतमिति मत आर्य व्यपदिशंति।

देश का नाम भारतवर्ष है, इस पर जैन और सनातन दोनों के धर्मशास्त्र एकमत है। मुगलकाल और अंग्रेजों के आगमन के बाद नगरों और कस्बों के नाम बदल दिये गये। एक व्युत्पत्ति के अनुसार (भारत) शब्द का अर्थ है आंतरिक प्रकाश या विदेक-रूपी प्रकाश में लीन। ज्ञान की खोज में संलग्न। सांस्कृतिक बोध की दृष्टि से 'भारत' शब्द पूर्णतः अर्थपूर्ण है। भारत की भाषाओं में देश को भारत, भारोत, भारता या भारतम कहा जाता है। भारतवर्ष एक भू-भाग मात्र का ही नाम नहीं है, अपितु भारतवर्ष वैदिककाल से 'आर्यावर्त' आरायनाडु, जम्बूद्वीप और 'अजनाभदेश' के नाम से भी पहचाना गया है, हमारे राष्ट्रगान में भी 'इण्डिया' शब्द नहीं है। 'भारत' शब्द संस्कृत के 'भ्र' धातु से आया है, जिसका अर्थ उत्पन्न करना है। भारत का शाब्दिक अर्थ है:-जो निर्वाह करता है, उत्पन्न करता है।

जैनाचार्य संत विद्यासागर जी तो लगातार कहते हैं 'इण्डिया नहीं भारत लिखो, बोलो। गर्व से कहो हम भारतीय हैं, 'भारत' से ही हमारी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, परम्परागत पहचान है। जय भारत!

- निर्मलकुमार पाटोदी

सम्पर्क: ७८६९९१७०७०

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

Postal Registration Number - MCN/294/2021-2023
WPP License No. MR/Tech/WPP-354/North/2021-23
Published on 19th September 2022 & Posting on 20th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए India नहीं

आह्वानकर्ता

वरिष्ठ पत्रकार व संपादक

बिजय कुमार जैन, मुंबई

मो. 9322307908

राष्ट्रीय अध्यक्ष

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

राष्ट्रीय महामंत्री
शोभा सादानी, कोलकाता
मो. 8910628944

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा
मो. 9414183919

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
निशा लड्ढा, कोलकाता
मो. 9830224300

राष्ट्रीय सह कोषाध्यक्ष
अनुपमा शर्मा (दाधीच), मुंबई
मो. 9702205252

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
सज्जनराज मेहता, चेन्नई
मो. 9444066089

विदेश संयोजक
अरूण मूंदड़ा, ह्यूस्टन-अमेरिका
मो. 009196107106

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059 से मुद्रित करवा कर बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-०२२-२८५० ९९९९, अणुडाक-mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना - www.mainbharathun.co.in,
द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI No. MAHHIN/2010/48574